रामेष्ट विशेषांक प्रथम अंक

(त्रैमासिक)

समर्थ गुरु रामदास महाराज जी

संपादकः- जनचेतना साहित्यिक सांस्कृतिक समिति - २२६ बीसलपुर (उ.प्र.)

जनचेतना साहित्यिक सांस्कृतिक समिति
जय-जय
पंजी० सं० २२६
बीसलपुर, पीलीभीत (उ० प्र०)

श्री बजरंगबली

"जय कार आदि बजरंगी की जो सच्चा प्रेम जगाता है"

वह भवसागर की धारा से अनायास पार हो जाता है,
तुम रामचंद्र के सायक वन लंका आतुर धाए थे|
लंका सी कोटि जलाए थे, सीता के दर्शन पाए थे,
लक्ष्मण के शक्ति लगने पर द्रोणागिरी लाए थे,
श्री भरत लाल को अवधपुरी में मीठे वचन सुनाए थे,
निज वाला बचपन याद करो जब सूरज को मुख में रखा,
सब देवों ने वरदान दिया, हनुमान नाम उन ने रखा,
श्री तुलसी दास पर कृपा करी जो ऐसी कविता रच पाए थे,
लिख दिया सारा रामायण में, जो और ग्रंथ में लिख पाए|

प्रभु चरणों में प्रेम समर्पित स्वामी दास बना लेना,
कट जाएंगे भव बंधन भगवन दर्श दिला देना |

अरण्य काण्ड
(४,५ दोहा)

हे राजकुमारी ! सुनिए माता पिता भाई सभी हित करने वाले हैं, परंतु यह सब एक सीमा तक ही सुख देने वाले परंतु हे जानकी! पति तो असीम सुख देने वाला है वह स्त्री अधम हैं जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है वृद्ध रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा क्रोधी और अत्यंत दीन ऐसे भी पति का अपमान करने में स्त्री यमपुर में भाँति भाँति के दुख पाती हैं| शरीर वचन और मन से पति के चरणों में समर्पित रहना स्त्री के लिए बस एक ही धर्म है, एक ही व्रत है, एक ही नियम है|

जगत में चार प्रकार की पतिव्रताएँ ~ ~

१)
उत्तम श्रेणी पतिव्रता के मन में ऐसा भाव बसा रहता है कि जगत मे मेरे पति को छोड़कर दूसरा पुरुष स्वपन में भी नहीं है|

२)
मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराए पति को कैसे देखती है जैसे अपना सगा भाई, पिता और पुत्र को, वो धर्म को विचार

कर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है|

३)

वह निम्न श्रेणी की स्त्री है, जो स्त्री मौका न मिलने से या भय बस पतिव्रता बनी रहती है जगत में उसे अधम स्त्री जानना |

४)

पति को धोखा देने वाली जो स्त्री पराए पति से रति करती है वह तो सौ कल्प तक नरक में पड़ी रहती है, क्षण भर के सुख के लिए सौ करोड़ जन्मों के दुख को नही समझती|

जो स्त्री छल छोड़कर पतिव्रता धर्म को ग्रहण करती है वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है किंतु जो पति के प्रतिकूल चलती है वह जहां भी जाकर जन्म लेती है वह भरी अवस्था में विधवा हो जाती है|

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्व-शत्रु-संहारणाय, सर्व-रोग-हराय, सर्व- वशीकरणाय, राम-दूताय स्वाहा”

ओम शिवाय नम:

श्री सीताराम आश्रम के द्वारा श्री राम के दर्शनार्थ जिज्ञासित विविध साधु संत,

परम श्रद्धेय श्री रामदास बापू द्वारा प्रत्यक्ष बहुत से सज्जनों द्वारा किए गए प्रश्नों का उत्तर तथा अपना अनुभव प्रत्यक्ष भगवत दर्शन के उपाय आप सब भक्तों के समक्ष प्रेषित करता हूं|

आज बहुत से सज्जन मन में शंका उत्पन्न कर इस प्रकार के प्रश्न किया करते हैं जैसे दो प्यारे मित्र आपस में मिलते हैं तो क्या इस कलि काल में भी भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन मिल सकते हैं यदि यह संभव है तो ऐसा कौन सा उपाय है जिससे हम उस मनो मोहनी मूरति का शीघ्र ही दर्शन कर सकें?

उत्तर~ यद्यपि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ,

तथापि परमात्मा की और महान पुरुषों की कृपा से केवल अपने मनो विनोदार्थ दोनों प्रश्नों के संबंध में क्रमश: कुछ लिखने का साहस कर रहा हूं|

‘श्रीमद् भागवत’ (१२.३.५२) में भी आता है :

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।

‘सत्ययुग में भगवान विष्णु के ध्यान से, त्रेता में यज्ञ से और द्वापर में भगवान की पूजा से जो फल मिलता था, वह सब कलियुग में भगवान के नाम-कीर्तनमात्र से प्राप्त हो जाता है ।’

ऐसा कलितारण भगवन्नाम सर्व पापों को हरकर परमात्म-प्रीति जगाने का अमोघ सामर्थ्य रखता है । पापविनाशक परम कृपालु परमात्मा सबके सुहृद, परम हितैषी, निकटतम व सबके लिए सहज हैं । वे सहस्ररूपाधिपति, सहस्रनामाधिपति होते हुए भी नाम-रूप से रहित हैं । जात-पाँत, गुण-धर्म को न देखकर जो जिस नाम से उन्हें भजता है, प्रभु वैसे ही उसे मिलते हैं । उसकी समझ को अधिकाधिक परिपक्व बनाते हुए अपने दिव्य स्वरूप का ज्ञान पाने की ओर उसे प्रेरित करते हैं ।

प्रात: मंगला श्रृंगार आरती

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी .
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ..

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी .
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभासिन्धु खरारी ..

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता .
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ..

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता .
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयौ प्रकट श्रीकंता ..

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै .
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ..

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै .
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ..

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा .
कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ..

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा .
यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहिं भवकूपा।।

दोहा

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

भावार्थ-

ब्राह्मण, गो, देवता और संतों के लिए भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया। वे (अज्ञानमयी, मलिना) माया और उसके गुण (सत, रज, तम) और (बाहरी तथा भीतरी) इंद्रियों से परे हैं। उनका (दिव्य) शरीर अपनी इच्छा से ही बना है (किसी कर्म बंधन से परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं)॥

श्री राम

(श्लोक)

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम।
पाणौ महासायकचारूचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम।।

भाव्याधि पोतं भरता गजेन्द्रं
भक्ति प्रियं भानुकुल प्रदीपम्।
भूताधिनाथं भुवनागि प्रत्यमं
भक्ति प्रियं भवरो गवैधम्||

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम
कारुण्यरूपं करूणाकरंतं
श्रीरामचन्द्रं शरण प्रपधे।।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव ।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

आपदाम्-अपहर्तारम् दातारं सर्व संपदां
लोकाभिरामं श्रीराममम् भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

आर्तानामार्तिहन्तारम् भीतानां भीतिनाशन
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ॥
श्रीराम स्तुति : श्री राम चंद्र कृपालु भजमन

संध्या शयन आरती

श्री राम चन्द्र जी की स्तुति

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भाव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।
कंदर्प अगणित अमित छवी नव नील नीरज सुन्दरम्।
पट्पीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमी जनक सुतावरम्।।
भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-धूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदय कुंज निवास कुरु कामादी खल दल गंजनम्।।

छंद :
मनु जाहिं राचेऊ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सावरों।
करुना निधान सुजान सिलू सनेहू जानत रावरो।।
एही भांती गौरी असीस सुनी सिय सहित हिय हरषी अली।
तुलसी भवानी पूजि पूनी पूनी मुदित मन मंदिर चली।।

।।सोरठा।।
जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

प्रयाग महात्म

दोहा :

तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ।

सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥

भावार्थ:-तब प्रभु श्री रघुनाथजी गणेशजी और शिवजी का स्मरण करके तथा गंगाजी को मस्तक नवाकर सखा निषादराज, छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित वन को चले॥

चौपाई :

तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई॥

भावार्थ:-उस दिन पेड़ के नीचे निवास हुआ। लक्ष्मणजी और सखा गुह ने (विश्राम की) सब सुव्यवस्था कर दी। प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने सबेरे प्रातःकाल की सब क्रियाएँ करके जाकर तीर्थों के राजा प्रयाग के दर्शन किए।।

सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी॥
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू॥

भावार्थ:-उस राजा का सत्य मंत्री है, श्रद्धा प्यारी स्त्री है और श्री वेणीमाधवजी सरीखे हितकारी मित्र हैं। चार पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) से भंडार भरा है और वह पुण्यमय प्रांत ही उस राजा का सुंदर देश है॥

छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा। सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा॥

भावार्थ:-प्रयाग क्षेत्र ही दुर्गम, मजबूत और सुंदर गढ़ (किला) है, जिसको स्वप्न में भी (पाप रूपी) शत्रु नहीं पा सके हैं। संपूर्ण तीर्थ ही उसके श्रेष्ठ वीर सैनिक हैं, जो पाप की सेना को कुचल डालने वाले और बड़े रणधीर हैं॥

संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा॥

भावार्थ:-((गंगा, यमुना और सरस्वती का) संगम ही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुनाजी और गंगाजी की तरंगें उसके (श्याम और श्वेत) चँवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है॥

दोहा :

सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥

भावार्थ:-पुण्यात्मा, पवित्र साधु उसकी सेवा करते हैं और सब मनोरथ पाते हैं। वेद और पुराणों के समूह भाट हैं, जो उसके निर्मल गुणगणों का बखान करते हैं॥

चौपाई :

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥

अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥

भावार्थ:-पापों के समूह रूपी हाथी के मारने के लिए सिंह रूप प्रयागराज का प्रभाव (महत्व-माहात्म्य) कौन कह सकता है। ऐसे सुहावने तीर्थराज का दर्शन कर सुख के समुद्र रघुकुल श्रेष्ठ श्री रामजी ने भी सुख पाया॥

कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई। श्री मुख तीरथराज बड़ाई॥
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा॥

भावार्थ:-उन्होंने अपने श्रीमुख से सीताजी, लक्ष्मणजी और सखा गुह को तीर्थराज की महिमा कहकर सुनाई। तदनन्तर प्रणाम करके, वन और बगीचों को देखते हुए और बड़े प्रेम से माहात्म्य कहते हुए-॥

एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा॥

भावार्थ:-इस प्रकार श्री राम ने आकर त्रिवेणी का दर्शन किया, जो स्मरण करने से ही सब सुंदर मंगलों को देने वाली है। फिर आनंदपूर्वक (त्रिवेणी में) स्नान करके शिवजी की सेवा (पूजा) की और विधिपूर्वक तीर्थ देवताओं का पूजन किया॥

तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥

भावार्थ:-(स्नान, पूजन आदि सब करके) तब प्रभु श्री रामजी भरद्वाजजी के पास आए। उन्हें दण्डवत करते हुए ही मुनि ने हृदय से लगा लिया। मुनि के मन का आनंद कुछ कहा नहीं जाता। मानो उन्हें ब्रह्मानन्द की राशि मिल गई हो॥

दोहा :

दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए बिधि आनि॥

भावार्थ:-मुनीश्वर भरद्वाजजी ने आशीर्वाद दिया। उनके हृदय में ऐसा जानकर अत्यन्त आनंद हुआ कि आज विधाता ने (श्री सीताजी और लक्ष्मणजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी के दर्शन कराकर) मानो हमारे सम्पूर्ण पुण्यों के फल को लाकर आँखों के सामने कर दिया॥

चौपाई :

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे॥
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के॥1॥

भावार्थ:-कुशल पूछकर मुनिराज ने उनको आसन दिए और प्रेम सहित पूजन करके उन्हें संतुष्ट कर दिया। फिर मानो अमृत के ही बने हों, ऐसे अच्छे-अच्छे कन्द, मूल, फल और अंकुर लाकर दिए

सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए॥

भए बिगतश्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥

भावार्थ:-सीताजी, लक्ष्मणजी और सेवक गुह सहित श्री रामचन्द्रजी ने उन सुंदर मूल-फलों को बड़ी रुचि के साथ खाया। थकावट दूर होने से श्री रामचन्द्रजी सुखी हो गए। तब भरद्वाजजी ने उनसे कोमल वचन कहे-॥

आजु सफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू।।

भावार्थ:-हे राम! आपका दर्शन करते ही आज मेरा तप, तीर्थ सेवन और त्याग सफल हो गया। आज मेरा जप, योग और वैराग्य सफल हो गया और आज मेरे सम्पूर्ण शुभ साधनों का समुदाय भी सफल हो गया॥

लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरें दरस आस सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥

भावार्थ:-लाभ की सीमा और सुख की सीमा (प्रभु के दर्शन को छोड़कर) दूसरी कुछ भी नहीं है। आपके दर्शन से मेरी सब आशाएँ पूर्ण हो गईं। अब कृपा करके यह वरदान दीजिए कि आपके चरण कमलों में मेरा स्वाभाविक प्रेम हो।।

एक बार समस्त संत समूह सूत जी के पास उपस्थित हुए और जिज्ञासा प्रकट की थी तत्ववेत्ता सूत जी आप त्रिकालदर्शी हैं, भूत भविष्य जानने वाले हैं हमारी शंका का समाधान केवल आप ही कर सकते हैं हम सभी ने अनेक तीर्थों का भ्रमण किया एवं वहां पर निवास भी किए पर हम जहां भी गए सब ने अपने को बड़ा ही बताया परंतु हमारे मन में मतभेद बना हुआ है इन तीर्थों में कोई सर्वोत्तम तीर्थ भी है क्या इनका कोई राजा भी है|

ऋषियों की अनुनय-विनय उत्कंठा को सुनकर परम दयालु व्यास जी के परम प्रिय शिष्य सूत जी ने कहा ! सुत उवाच~~ हे ब्राह्मणों यह बात गुरु के वचनों के अनुसार कहता हूं अन्य क्षेत्रों में किए गए पाप पुण्य क्षेत्र में नष्ट हो जाते हैं पुण्य क्षेत्र में किए गए पाप कुंभ कोज नामक क्षत्र में नष्ट होते हैं कुंभ कोज में किए गए पाप वाराणसी में नष्ट हो जाते हैं और वाराणसी में किए गए पापा प्रयाग में नष्ट हो जाते हैं और प्रयाग में किया हुआ पाप यमुना स्नान से क्षय हो जाता है यमुना में किया हुआ पाप सरस्वती में नष्ट होता है तथा सरस्वती में किया हुआ था गंगा स्नान से नष्ट होता है तथा गंगा में किया हुआ पाप, गंगा यमुना के संगम में नष्ट होता है और वहां पर किया गया पाप यदि वही मृत्यु हो जाए तो वहीं पर नष्ट हो जाता है और वह जीव मुक्त हो जाता है अन्यथा पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई जगह नहीं है जो उस जीव को मुक्त कर सके इस प्रकार यह तीर्थ समस्त तीर्थों का राजा है|

जयति प्रयागः
तीर्थ राज प्रयाग महाराज की जय

हे ब्राह्मणों! गुरु कृपा से मैंने प्रयागराज का थोड़ा वर्णन किया है अब आगे कहता हूँ आप सब सावधान होकर सुनो और सुनकर अपने जीवन में उतारो। क्षुद्र विषयों की कामना के लिए तीर्थ राज का सेवन करें मात्र इनके सेवन से जीव की समस्त मनोकामना पूर्ण हो जाती है।
जिस प्रकार राजा प्रसन्न होकर प्रजा को बहुत साधन हाथी, घोड़े, जेवरात प्रदान करता है उसी प्रकार तीर्थ राज प्रयाग भी नीचे से नीचे सेवक को भी अपने सदृश बनाकर मुक्ति प्रदान करते हैं।

जिस प्रकार मूर्ख मनुष्य भगवान को छोड़ प्रेतों से कामना पूर्ति की इच्छा रखता है उसी प्रकार मूढ़ मनुष्य तीर्थराज को छोड़कर अन्य तीर्थों को महान आँकता हुआ दूसरे तीर्थों का सेवन करता है। शास्त्र कहते हैं कि ऐसा मनुष्य अपराधी की श्रेणी में आता है। उसे दण्ड देना ही उचित है। अरे इस तीर्थ में तो तारक मंत्र की भी आवश्यकता नही होती है। जीव यहाँ सहज ही मुक्त हो जाते हैं। सांसारिक सुखो की चाहत रखने वालों को तीर्थराज प्रयाग का सेवन करना चाहिए। प्रयाग राज में किया गया जप तप दान श्राद्ध इत्यादि अक्षय फल प्रदान करने वाले हैं स्वर्ग भी यहाँ आने की अहनिश इच्छा रखता है। यह प्रयाग राज सर्वश्रेष्ठ है। इस स्थान पर स्नान करने मात्र से मनुष्य शिव विष्णु ब्रह्म-लोकों में अपनी इच्छा अनुसार रह सकता है। जिस क्षेत्र या देश में प्रयाग महात्मा का वर्णन होता है वहाँ के मनुष्यों की जड़ता दूर हो जाती है।

सूत जी बोले- जो मनुष्य इस तीर्थ का महात्मा श्रद्धा भक्ति से सुनता है उसे त्रिवेणी स्नान का संपूर्ण फल प्राप्त होता है तथा लोक-परलोक की समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती है। जो मनुष्य माघ मास में माघ महात्मा सुनता है उस मनुष्य के न रहने के बाद भी उसके पुत्र पौत्रादि को भी सभी सांसारिक सुख प्राप्त हो अंत में मोक्ष प्राप्त होता है।

अब भगवान को प्रसन्न करने हेतु अन्य प्रकार के दान बता देते हैं।
सामर्थ्यवान मनुष्य अकेले ही दान की व्यवस्था करे दूसरे की सहायता की अपेक्षा न करे अकेले ही सर्वस्व दान देना चाहिए। विधिपूर्वक दान देने से उसका फल कई गुणा बढ़ जाता है। अन्न, गृह, जमीन, वस्त्र, आभूषण आदि समस्त सामग्री दान में देनी चाहिए केवल वस्त्रों को छोड़कर आवश्यकता से अधिक जो भी धन हो उसे सत्पात्र को दान देना चाहिए।
जो मनुष्य प्रतिदिन श्रद्धा से माघ महात्म सुनता है वह चाहे जिस भी जगह रहे उसे त्रिवेणी स्नान का फल प्राप्त होता है।

पहले जिसको पाराशर पुत्र व्यास जी ने कहा पुनः उसी को नैमिषारण्य में शौनक इत्यादि ऋषियों से सूत जी ने कहा ! फिर शेष ब्रह्मा के पुत्रों को सविस्तार सुनाया आज वही प्रसंग गुरुदेव स्वामी समर्थ गुरु रामदास जी ने सुनकर मेरा जीवन तो धन्य हो गया| ऐसे गंगा यमुना सरस्वती के संगम, अक्षयवट, वेणीमाधव भगवान को बारंबार प्रणाम है|

संत और असंत में भेद

सन्तों और असंतों के बीच भेद करना आज के युग कलयुग में कठिन हो रहा है किसे सही समझा जाए, किसे गलत समझा जाए यह अत्यंत कठिन प्रश्न है|

श्री राम जी के अयोध्या वापस आने के बाद एक दिन भरत जी ने राम जी से प्रश्न किया कि ! प्रभु आने वाला समय बहुत ही कठिन है जनमानस में अत्याचार का बोलबाला रहेगा, ऐसे में साधु जन संत और असंत में भेद कैसे कर पाएंगे ?

भरत जी ~
चौपाई ०
संत असंत भेद बिलगाई। प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई॥

संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता। अगनित श्रुति पुरान बिख्याता॥3

भावार्थ
हे शरणागत का पालन करने वाले! संत और असंत के भेद अलग-अलग करके मुझको समझाकर कहिए। (श्री रामजी ने कहा-) हे भाई! संतों के लक्षण (गुण) असंख्य हैं, जो वेद और पुराणों में प्रसिद्ध हैं॥

हे मेरे अत्यंत प्रिय भरत वेद पुराणों में जो बातें कही गई हैं उसे सुनिए :~
चौपाई~
संत असंतन्हि कै असि करनी|
जिमि कुठार चंदन आचरनी||

हे भ्राता ! संत असंत की करनी, कुल्हाड़ी और चंदन के वृक्ष की तरह है, जिस प्रकार कुल्हाड़ी चंदन के वृक्ष को काट डालती है परंतु चंदन का स्वभाव शीतल और सुगंधित होता है जिसके कारण कुल्हाड़ी में भी उसकी सुगंध आ जाती है, परंतु कुल्हाड़ी को फिर आग में तपना पड़ता है उसी प्रकार संत और असंत भी हैं, कुल्हाड़ी असंत है और चंदन संत है|

संत सहहिं दुख पर हित लागी

संत वो है जो दूसरे के दुख को देखकर दुखी हो जाते हैं परंतु जो असंत हैं वह और अधिक प्रसन्न होते हैं संतों की विषयों पर आसक्ति नहीं होती परंतु असन्त कामी, क्रोधी, परद्रोही एवं निन्दारत हुआ करते है, जो ऐसे कामों में लिप्त हो उसका संग भूलकर भी नहीं करना चाहिए| संतों के आचरण बहुत ही सुभाषित, निर्मल होते हैं ठीक चंदन की तरह, जिस प्रकार चंदन पर सर्पों के लिपटे रहने पर भी चंदन को कोई असर नहीं होता परंतु कोई सर्प से छेड़खानी करे तो सर्प शीघ्र ही उसे काट लेता है, यही असंत की श्रेणी है|
दुष्ट प्रवृत्ति की कपिला गाय भी दुधारू और सीधी गाय को मार डालती है| असंत दूसरों की निंदा सुनता है तो बहुत हर्षित होता है परंतु संत ऐसा नहीं करते हैं, असंत तो झूठ ही खाता है, पीता है, चबाता है ऐसे लोग राक्षसों की श्रेणी में आते हैं परंतु संतों की बात ही क्या कहना|

चौपाई ~
कोमल चित दीनन्ह पर दाया।
मन बच क्रम मम भगति अमाया।
सबहिं मानप्रद आपु अमानी।भरत प्रान सम मम ते प्रानी।

भावार्थ~
संत का हृदय कोमल एवं गरीबों पर दयावान होता है एवं मन वचन और कर्म से वे ईश्वर में निश्कपट भक्ति रखते हैं। वे सबकी इज्जत करते हैं पर स्वयं इज्जत से इच्छारहित होते हैं।
वे प्रभु को प्राणों से भी प्रिय होते हैं।

चौपाई~
बिगत काम मम नाम परायण।सांति विरति विनती मुदितायन।
सीतलता सरलता मयत्री।
द्विज पद प्रीति धर्म जनपत्री।

भावार्थ~
उन्हें कोई इच्छा नहीं रहती।वे केवल प्रभु के नाम का मनन करते हैं।
वे शान्ति वैराग्य विनयशीलता और प्रसन्नता के भंडार होते हैं।
उनमें शीतलता सरलता सबके लिये मित्रता ब्राह्मनों के चरणों में प्रेम और धर्मभाव रहता है।

चौपाई~
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर।जानेहुँ तात संत संतत फुर।।
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं।परूस बचन कबहूँ नहि बोलहिं।।

भावार्थ~
जो ब्यक्ति अपने मन बचन और कर्म इन्द्रियों का नियंत्रण रखता हो जो नियम और सिद्धान्त से कभी विचलित नहीं हो
और मुँह से कभी कठोर वचन नहीं बोलता हो-इन सब लक्षणों बालें को सच्चा संत मानना चाहिये।

चौपाई~
निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुखपुंज।

भावार्थ~
जिनके लिये निंदा और बड़ाई समान हो और जो ईश्वर के चरणों में ममत्व
रखता हो वे अनेक गुणों के भंडार और सुख की राशि प्रभु को प्राणों के समान प्रिय हैं।

पतिव्रता धर्म

माता अनुसूइया के द्वारा सीता जी को पति धर्म समझाना~

वंदनीय माताओं एवं बहनों ! क्योंकि भारतीय नारियाँ भारतीय संस्कृति का अनुपालन करती हैं| सभी को सीता अहिल्या सावित्री, गार्गी, उर्मिला, सुलोचना जैसी महान नारियों के पदचिन्हों का अवलोकन अवश्य ही करना चाहिए | माता सीता यद्यपि जगत जननी थी, उन्हें मर्यादा का पूरा ध्यान था फिर भी वन गमन के समय जब सीता की भेंट परम सती माता अनुसूया से होती है तो सीता जी एक आदर्श बहू की तरह पेश आयी जिसके कारण माता अनुसूया ने बेटी की तरह उन्हें समझाया | अयोध्या से निकलते समय जो वस्त्र माता सीता ने धारण किए बेशक मैले कुचैले हो गए थे उन्हें देखा तो पुत्री समझकर उन्होंने माता सीता को ऐसे वस्त्र पहनाए जो कभी गंदे नहीं होते|

वे वस्त्र क्या थे, साड़ी नहीं थी, वह उन्हें आचरण रूपी वस्त्र पहनाती हैं सीता जी ने माता अनुसुइया को सर्वप्रथम प्रणाम किया था, रामचरितमानस में प्रसंग आता है जिसमें उपरोक्त बातों की पुष्टि होती है|

चौपाई~
अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई। आसिष देइ निकट बैठाई॥

भावार्थ~
फिर परम शीलवती और विनम्र श्री सीताजी अनसूयाजी (आत्रिजी की पत्नी) के चरण पकड़कर उनसे मिलीं। ऋषि पत्नी के मन में बड़ा सुख हुआ। उन्होंने आशीष देकर सीताजी को पास बैठा लिया॥

चौपाई~
दिब्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए॥
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी॥

भावार्थ : और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाए, जो नित्य-नए निर्मल और सुहावने बने रहते हैं। फिर ऋषि पत्नी उनके बहाने मधुर और कोमल वाणी से स्त्रियों के कुछ धर्म बखान कर कहने लगीं।

बड़ी सरस बात बताई माता अनुसूया जी ने सीता जी को, स्त्री का असली गहना (आभूषण) उसकी लज्जा है, जो नारी सलज्जा है वह फटे पुराने वस्त्रों में भी शोभा पाती है| जिसका आचरण भारतीय संस्कृति के अनुकूल है, वह दिव्यता को प्राप्त है वो इस कलिकाल में भी पूजनीय है|

बेटी के लिए माता- पिता- भ्राता यह सब तो हितकारी है ही परंतु स्त्री जब माता-पिता का गृह छोड़कर पति के घर में आती है तो उसको वहां सभी प्रकार के लोग मिलते हैं, एन के व्यवहार पृथक-पृथक होते हैं ऐसे में स्त्री की सत्य की परीक्षा होती है सब को संतुष्ट रखते हुए पति की सेवा अनिवार्य होती है| पति धनवान हो यह भी जरूरी नहीं है परंतु उसकी सेवा स्त्री को करनी ही चाहिए|

अमित दान भर्ता वैदेही।
अधम सोनारि जो सेव न तेही॥

महासती अनुसुइया द्वारा देवी सीता को उपदेश दिया गया अतः इनकी सत्यता में सन्देह के लिये तनिक भी स्थान नहीं है। सम्बन्धियों को मितप्रद पर पति को “अमित दान” देने वाला कहा गया है ? अमित के अर्थ हैं असीम जिसकी तादाद न हो और इन्द्रियों के द्वारा जो भी विषय उपभोग किये जाते हैं वे सभी क्षण भंगुर हैं अस्तु इनसे परे जो परमात्मा है उसी को असीम कहा जा सकता है। अब प्रश्न ये उठता है ‘भर्ता’ अमित का दान कैसे दे सकता है? यहाँ पर यही गोस्वामी जी का संकेत प्रतीत होता है कि पति को प्रतीक बनाकर उसमें जगत्पति की श्रद्धा विश्वास पूर्वक उपासना करने पर ‘अमित’ को ‘भर्ता’ द्वारा पाया जा सकता है।

चौपाई~
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥4॥

भावार्थ~
धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री- इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन-॥

पेज नं. १०

चौपाई~
मध्यम परपति देखइ कैसें।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसें॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई।
सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।।

भावार्थ : मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराए पति को कैसे देखती है, जैसे वह अपना सगा भाई, पिता या पुत्र हो (अर्थात समान अवस्था वाले को वह भाई के रूप में देखती है, बड़े को पिता के रूप में और छोटे को पुत्र के रूप में देखती है।) जो धर्म को विचारकर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है, वह निकृष्ट (निम्न श्रेणी की) स्त्री है, ऐसा वेद कहते हैं॥

चौपाई~
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥
पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥

भावार्थ : और जो स्त्री मौका न मिलने से या भयवश पतिव्रता बनी रहती है, जगत में उसे अधम स्त्री जानना। पति को धोखा देने वाली जो स्त्री पराए पति से रति करती है, वह तो सौ कल्प तक रौरव नरक में पड़ी रहती है॥

चौपाई~
छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥

भावार्थ : क्षणभर के सुख के लिए जो सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुःख को नहीं समझती, उसके समान दुष्टा कौन होगी। जो स्त्री छल छोड़कर पतिव्रत धर्म को ग्रहण करती है, वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है॥

चौपाई~
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥

भावार्थ : किन्तु जो पति के प्रतिकूल चलती है, वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है, वहीं जवानी पाकर (भरी जवानी में) विधवा हो जाती है॥

नवधा भक्ति

नवधा भक्ति के बारे में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी सबरी को बताते हैं, सबरी तो नीच जाति की है, फिर भी भगवान ने पूर्ण भक्त का दर्जा दिया भगवान के यहां ऊंच नीच का भेदभाव नहीं है, उनके पास रागी नहीं अनुरागी पहुंचता है और हमारे अंदर शबरी जैसी लगन हो, भाव हो तो भगवान को स्वयं आना पड़ेगा| शबरी के अंदर गुरु भक्ति कूट-कूट भरी थी उसने गुरुदेव मतंग ऋषि की जी जान से सेवा की थी उसकी सेवा से प्रसन्न होकर मतंग मुनि ने उसे आशीर्वाद दिया था कि शबरी तुझ में गुरु भक्ति अपार है मेरा आशीर्वाद है जिस प्रकार मैं कह रहा हूं तू वही कर ! जिस प्रकार तूने मेरी भक्ति की है उसी प्रकार भगवान की भक्ति कर एक दिन भगवान तुझे यहीं पर दर्शन देंगे, गुरु ने कोई मंत्र नहीं दिया था शबरी को केवल इतना बताया था कि राम इस अमुख रास्ते से गुजरेंगे तो यहां तुम्हारे पास जरूर आएंगे और उनकी बातों पर विश्वास करके वह उसी आश्रम में पड़ी रही, गुरु की बातों में विश्वास परम आवश्यक है|

सद्गुरु वैध वचन विश्वासा~
उनकी बातों में विश्वास कर वह नित्य प्रति उस रास्ते को साफ करती, फलों को बिछाती मीठे- मीठे फल रोज इकट्ठे करते और गुरु के वचनों को रोज ही मंत्र रूप में जमा करती, याद किया करती थी गुरुदेव ने कहा है, भगवान एक न एक दिन अवश्य आएंगे और हुआ भी यही| यह भी एक प्रकार की भक्ति है~ "नवधा भक्ति" वह वही कार्य रोज नियम से करती थी, यदि वह यही कार्य रोज ना करती तो शायद भगवान ना आते| कहा गया है:

कह हनुमंत विपति प्रभु सोई|
जब तब सुमिरन भजन न होई||

सद्गुरु के वचनों का विश्वास कर वह उसी कार्य को तन - मन से किया करती थी जिसके फलस्वरुप उसको भगवान के
दर्शन हुए|
वनवास के समय भगवान राम, गिद्ध की अंतिम क्रिया करने के बाद सीधे मतंग मुनि के आश्रम आए|

चौपाई~
ताहि देइ गति राम उदारा।
सबरी कें आश्रम पगु धारा॥
सबरी देखि राम गृहँ आए।
मुनि के बचन समुझि जियँ भाए।।
भावार्थ~
उदार श्री रामजी उसे गति देकर शबरीजी के आश्रम में पधारे। शबरीजी ने श्री रामचंद्रजी को घर में आए देखा, तब मुनि मतंग जी के वचनों को याद करके उनका मन प्रसन्न हो गया॥

चौपाई~
सरसिज लोचन बाहु बिसाला।
जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई।

सबरी परी चरन लपटाई॥
भावार्थ~
कमल सदृश नेत्र और विशाल भुजाओं वाले, सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुंदर, साँवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरी जी लिपट पड़ीं।

चौपाई~
प्रेम मगन मुख बचन न आवा।
पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥
सादर जल लै चरन पखारे।
पुनि सुंदर आसन बैठारे॥
भावार्थ~
वे प्रेम में मग्न हो गईं, मुख से वचन नहीं निकलता। बार-बार चरण-कमलों में सिर नवा रही हैं। फिर उन्होंने जल लेकर आदरपूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोए और फिर उन्हें सुंदर आसनों पर बैठाया॥

चौपाई~
कंद मूल फल सुरस अति
दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु
खाए बारंबार बखानि॥
भावार्थ~
उन्होंने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कन्द, मूल और फल लाकर श्री रामजी को दिए। प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया॥

चौपाई~
पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी।
प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी॥
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी।
अधम जाति मैं जड़मति भारी।।
भावार्थ~
फिर वे हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गईं। प्रभु को देखकर उनका प्रेम अत्यंत बढ़ गया। (उन्होंने कहा-) मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जाति की और अत्यंत मूढ़ बुद्धि हूँ॥

चौपाई~
अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता॥
भावार्थ~
जो अधम से भी अधम हैं, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यंत अधम हैं, और उनमें भी हे पापनाशन! मैं मंदबुद्धि हूँ। श्री रघुनाथजी ने कहा- हे भामिनि! मेरी बात सुन! मैं तो केवल एक भक्ति ही का संबंध मानता हूँ॥

चौपाई~
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।

धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥
भावार्थ~
जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता- इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन बादल (शोभाहीन) दिखाई पड़ता है॥

चौपाई~
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं।
सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥
भावार्थ~
मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर। पहली भक्ति है संतों का सत्संग। दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम।

चौपाई~
गुर पद पंकज सेवा
तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन
करइ कपट तजि गान॥
भावार्थ~
तीसरी भक्ति है अभिमानरहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें॥

चौपाई~
मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा।
निरत निरंतर सज्जन धरमा॥1॥

भावार्थ~
मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास- यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना॥

चौपाई~
सातव सम मोहिमय जग देखा ।
मोते संत अधिक करि लेखा ।।

आठव जथा लाभ संतोषा ।
सपनेहु नहीं देखई परदोषा।।

नवम सरल सब सन छल हीना।
मम भरोस हिय हरष न दीना ।।

नव महुं एकउ जिनके होई।
नारी पुरुष सचराचर कोई।।

मम दरसन फल परम अनूपा।
जीव पाइ निज सहस सरूपा।।

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ ।
ते नर प्राण समान मम जिन के द्विज प्रेम।।

सोई अतिसय प्रिय भामिनी मोरे।
सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे।।

भावार्थ~
गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस में नवधा भक्ति का उल्लेख हुआ है | रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में श्री राम ने शबरी के प्रति भक्ति के इन नौ अंगों अर्थात नवधा भक्ति का उल्लेख किया है | जो व्यक्ति इस नवधा भक्ति का विधिपूर्वक अनुष्ठान और हवन करता है उसे परमपद की प्राप्ति होती है और सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति मिलती है |

चौपाई~
जोगि वृंद दुर्लभ गति जोई|
तो कह आज सुलभ भई सोई||

भावार्थ~
∆ संतों का संग यानी सत्संग करें| ∆ मेरी कथा में अति प्रेम हो जाएँ| ∆. गुरु चरणों की सेवा पूजा और मान अपमान से रहित, मेरा निरंतर भजन करें|

∆ नाम का जप दृढ़ विश्वास के साथ करें|
∆ संसारी आडंबर में ना पड़ें सभी में मुझे देखें और संत मिले तो मुझसे अधिक मान दें|

∆ जो भी है जितना भी है उसी में संतोष करें और दूसरों के दोष को न देखें|
∆ सीधा सादा जीवन जिएँ और मेरे ऊपर संपूर्ण समर्पण का भाव रखें| इन नवों में से एक भी जिसके अंदर रहेगी वह

मुझे परम प्रिय होता है|
हे शबरी तुम्हारे अंदर तो नौ की नौ भक्ति है जो ऋषि-मुनियों में भी दुर्लभता से पायी जाती है इस प्रकार वचन कहकर भगवान आगे प्रस्थान कर गए|

सम्पादक की कलम से

समर्थ सद्गुरु रामदास जी महाराज ने हनुमंत लाल जी की उपासना इस प्रकार की है कि यहां (गुजरात) पर वह स्थान आश्रम सिद्ध पीठ बन चुका है यहां पर हनुमंत लाल जी की शक्ति प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है इसलिए यहां पर हजारों नर नारियों का कल्याण हो चुका है और जब तक इस धरा - धाम पर उनका अस्तित्व रहेगा, कल्याण होता ही रहेगा| आज हजारों नर-नारी उनके दर्शन और आशीर्वाद से आनंदित हो चुके हैं, सदगुरुदेव गृहस्थ होते हुए भी सिद्ध हो चुके हैं और निरंतर विश्व कल्याण की भावना से गौ, ब्राह्मण, स्त्री तथा धर्म की रक्षा के लिए अनवरत प्रयास कर रहे हैं| विश्व शांति की भावना एवं जीवन संकल्प को पूर्ण करने के लिए समर्थ गुरु रामदास बापू महाराज जी, कठिन संघर्षों से उबरते हुए एवं सत्य का आचरण करते हुए श्री राम की मर्यादा को धारण करते हुए हनुमंत लाल जी की भक्ति से प्रभावित होकर , वाडी कलिया, अतुल, जिला - वलसाड गुजरात में स्थित श्री सीताराम आश्रम में दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं का कल्याण करते हैं| जिन्हें भी किसी प्रकार की अशांति हो वह एक बार श्रद्धा पूर्वक आकर सीताराम आश्रम में गुरुदेव का दर्शन करें और श्री संकट मोचन महाबली हनुमान की शक्ति से अपने जीवन के कष्टों को दूर करें| सद्गुरु की कृपा से समस्त दोष रोगों का विनाश अवश्य होगा ऐसा मेरा विश्वास है, सच्चे संतों की सेवा उनकी संगति हमेशा भक्त साधक एवं शिष्य को सत मार्ग की ओर ले जाती है|

आशीर्वाद प्राप्ति के बाद मनुष्य कांच और कौड़ी के चक्कर में नहीं फंसता उसे जीव और ईश की समझ आ जाती है फिर वह सिर्फ सत्संग गंगा में गोते लगाते हुए भगवान के चरणों का प्रिय पात्र हो जाता है, फिर वह तमाम लोगों को प्रिय हो जाता है|

संत मिलन को जाइए तज माया अभिमान |
ज्यों-ज्यों पग आगे धरत कोटि यज्ञ समान||

ऐसे गुरुदेव की कृपा से हमारे जीवन का कल्याण होगा इसमें संदेह नहीं है
सत्संगति और संत दरस तुलसी दुर्लभ होय|
नहि कलि करमन भगत विवेकू| राम नाम अवलंबन एकू||

तीरथराज प्रयाग महुँ कारण जग कल्याण|
प्रकट भये श्री सद्गुरु रामदास भगवान||

समर्पित जय गुरुदेव

स्त्रियों के लिए उपयोगी
ओखली, मूसल, झाड़ू, हाथ चक्की (जाँत) और द्वार की देहली पर स्त्रियों को कभी नहीं बैठना चाहिए|
पति की आयु बढ़ाने की अभिलाषा वाली स्त्रियां हल्दी, रोली, सिंदूर, काजल, चोली आभूषण, पान, केशों को सँवारना, चोटी गूथना तथा हाथ पैर, कान इत्यादि आभूषणों से कभी दूर नहीं रहना चाहिए सर्वदा सुसज्जित रखना

चाहिए| कोई भी व्रत उपवास पति की आज्ञा लेकर ही करना चाहिए वरना वह पति की आयु को क्षीण करेगा और स्त्रियों को नर्क में डाल देगा| पति यदि कुराही हो तो यह नियम लागू नहीं है| रजोधर्म से युक्त स्त्री पहले दिन चांडाली, दूसरे दिन ब्रह्मघाटिनी एवं तीसरे दिन रजकी (धोबिन) होती है एवं चौथे दिन वह शुद्ध होती है, चौथे दिन वह पति का कार्य कर सकती है परंतु देवकार्य पितृ कार्य के लिए पांचवे दिन शुद्ध होती है|

पति के अनुकूल चलने वाली स्त्री को पति के पुण्य कार्य का आधा हिस्सा अपने आप प्राप्त हो जाता है|

जो स्त्री अपने पति को भगवान मानकर उसकी सेवा करती है स्वर्ग में उसे पति के साथ लक्ष्मी की तरह पूजा जाता है तथा पति के साथ ही आनंदित होती है|

विधवा वही स्त्री कहलाती है, जिसका न पति हो न ही पुत्र, पुत्र के रहते हुए पति विहीन स्त्री विधवा नहीं कही जाती|

स्त्री पर पति या पुत्र के द्वारा लिए गए ऋण को चुकाने का दायित्व नहीं होता है| वह वही ऋण चुकाए, जिसे अपने पति के साथ लिया हो और चुकाना स्वीकार किया हो|

विविध ~ राजा प्रजा के, गुरु शिष्य के, पति पत्नी के, तथा पिता पुत्र के पुण्य और पाप का छठा अंश प्राप्त कर लेता है, पर स्त्री का तो कहना ही क्या है|

अपनी बहन बेटी यहां तक कि माता के साथ भी एकांत में नहीं बैठना चाहिए, कारण यह है कि बलवान इंद्रिय समूह विद्वान को भी अपने वश में कर लेती है|

धूल प्रकरण

गौ की धूलि, धान्य की धूलि, पुत्र के अंगों में लगी हुई धूलि अत्यंत शुभ एवं महा पातकनाशिनी होती है ।
जो मनुष्य गौ की धूलि अपने मस्तक पर धारण करता है ,उसे तीर्थ स्नान का फल प्राप्त होता है, और उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । किसी भी प्राणी के शरीर को ऊपर से कभी नहीं लाँघना चाहिए ।
दीन- हीन, पंगु, वृद्ध- जन, गूँगा और ब्राह्मण कैसा भी हो, कभी अपमान तिरस्कार नहीं करना चाहिए ।
नाखून वाले जीवों का, नदियों का, सींग वाले पशुओं तथा शस्त्रधारियों का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए ।
जो स्त्री घर के बर्तनों को सुव्यवस्थित रूप से न रखकर अस्त व्यस्त रखती है, और सोच समझ कर काम नहीं करती है, अपने पति से भला- बुरा कहती है । पति के प्रतिकूल रहकर दूसरे घरों में घूमने- फिरने जाती है, तथा लज्जा का त्याग करती है, उन्हें लक्ष्मी जी सदा के लिए त्याग देती हैं । ब्रह्महत्या का जो पाप लगता है, उससे दो गुना पाप गर्भपात से लगता है । जिस स्त्री- पुरुष ने स्वेच्छा से गर्भपात करवाया है, उसका देखा गया अन्न भी दूषित हो जाता है,उसे ग्रहण नहीं करना चाहिए । इस पाप का कोई प्रायश्चित नहीं होता तथा मरने के बाद नर्क में पड़ता है ।तथा सुअर, कौआ, सर्प यौनि को पाते हुए पुनः कोढ़ी मानव जीवन प्राप्त करता है ।

कर्म गीता उपदेश

अर्जुन उवाच- हे श्री कृष्ण जी यह प्राणी जो गर्भवास में आता है; वह किस दोष के कारण आता है? प्रभु जी जब यह जन्मता है, तब इसको जरा आदिक दोष लगते हैं, फिर मृत्यु हो जाती है । हे स्वामी वह कौन सा कर्म है जिसके करने से प्राणी जन्म- मरण से रहित होता है? श्री कृष्ण भगवान उवाच- हे अर्जुन! जो यह मनुष्य है, वह अन्धा और मूर्ख है । यह संसार के साथ प्रीति करता है । यह पदार्थ मैंने पाया है, और

पाऊँगा!ऐसी चिन्ता इस प्राणी के मन से नहीं उतरती है, आठों पहर माया को ही माँगता रहता है, इसलिए प्राणी बारम्बार जन्मता और गर्भ विषयक दुःख पाता है । अर्जुन उवाच- हे श्री कृष्ण भगवान! यह मन-मस्त हाथी के समान है, तृष्णा उसकी शक्ति है । यह पाँच इन्द्रियों के वश में है । काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार, इन पाँचों में अहंकार बहुत बली है इसके लिए कौन सा यत्न है जिससे मन बस में हो जाए|

पेज नं. १६

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन ! यह मन निश्चय ही हाथी के समान है, तृष्णा इसकी शक्ति है । इन में अहंकार श्रेष्ठ है, जो मन के वश में है ।जैसे हाथी अंकुश से वश में होता है, वैसे ही मन रूपी हाथी को वश में करने के लिए ज्ञान रूपी अंकुश है ।अहंकार करने से जीव नरक में पड़ता है ।

हे अर्जुन ! जो किसी से कर्ज लेता है, और देता नहीं, इस पाप से स्त्री मरती है । जो किसी की रखी हुई अमानत की बेईमानी कर लेते हैं, देते नहीं हैं, तो इस पाप से पुत्र मरता है, जो किसी का कार्य करने के लिए जबानी कहें, कि तेरा कार्य सबसे पहले कर दूँगा! और समय आने पर करते नहीं हैं, इस पाप से नपुंसक होता है । ये बड़े पाप हैं ।

अर्जुन उवाच- हे श्री कृष्ण भगवान! किस पाप से मनुष्य रोगी होता है, किस पाप से स्त्री का जन्म और टट्टू का जन्म पाता है?

श्री कृष्ण भगवान - हे अर्जुन! जो मनुष्य कन्यादान करते हैं, और इस दान में मूल्य लेते हैं, वे दोषी हैं, वे सदा रोगी रहते हैं । जो विषय विकार के लिए मदिरा पान करते हैं, वे टट्टू का जन्म का पाते हैं, तथा जो झूठी गवाही देते हैं, वे स्त्री का जन्म पाते हैं।

अर्जुन उवाच - हे श्री कृष्ण भगवान ! कई मनुष्यों को तो आपने स्वर्ग दिया है, उन्होंने कौन सा पुण्य किया है और कई मनुष्यों को तो आपने हाथी, घोड़े, रथ दिए है, उन्होंने कौन सा पुण्य किया है ?

श्री कृष्ण भगवान - हे अर्जुन! जो मनुष्य स्वर्ण दान करते हैं, उन्हें हाथी, घोड़े और वाहन प्राप्त होते हैं, जो मनुष्य परमेश्वर निमित्त कन्या दान करते हैं, वे पुरुष का जन्म पाते हैं।

अर्जुन उवाच - हे श्री कृष्ण भगवान ! जिन पुरुषों को सुंदर विचित्र शरीर प्राप्त हुआ है, उन्होंने कौन से पुण्य किये हैं। किसी के घर सम्पत्ति है, कितने विद्वान हैं उन्होंने कौन से उत्तम पुण्य किये हैं ।

पेज नं. १७

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन! जिन्होंने अन्न दान किया है, उसका स्वरूप सुंदर है । जिन्होंने विद्या दान किया है, विद्वान होते हैं । जिन्होंने संतों की सेवा की है, वे पुण्यवान होते हैं।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! किसी को धन से प्रीति है, तो कोई स्त्रियों से प्रीति करते हैं । इसका क्या कारण है ?

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन ! धन, स्त्री ये सब नाशवान हैं, मेरी भक्ति का नाश नहीं होता है।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! राज-पाठ कौन से धर्म से मिलता है एवं विद्या कौन से पुण्य से मिलती है ?

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन! जो मनुष्य काशी में निष्काम भक्ति से तप करते हैं, और देह त्यागने पर राजा होते हैं और गुरु सेवा करते हैं विद्वान होते हैं।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! किसी को बिना परिश्रम के अचानक ही धन मिलता है,और कोई रोग सहित होते हैं, उन्होंने कौन सा पुण्य किया है ?

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन! जिसने गुप्त दान किया है, उन्हें अनायास ही धन मिलता है ।जिन्होंने परमेश्वर का कार्य और पराया कार्य सँवारा है, वे रोग रहित होते हैं ।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! किस पाप से अमल धोते हैं, और किस पाप से कुष्टी का जन्म पाते हैं?

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन! जो अपने कुल की स्त्री से गमन करते हैं, वे अमली होते हैं, और जो गुरु की विद्या पाकर मुकर जाते हैं, वे गूँगे होते हैं, जिन्होंने कुकर्म किया वे कुष्टी होते हैं ।

अर्जुन उवाच - हे श्री कृष्ण भगवान! किसी के शरीर में रक्त का विकार होता है,वह किस पाप से, एवं कोई दरिद्र होता है,किसी को खण्ड वायु होती है, कोई अंधे होते हैं।पंगु होते हैं, वे कौन से पाप से होते हैं? कोई स्त्रियाँ बाल विधवा होती हैं, वे कौन से पाप से होती हैं ?

श्री कृष्ण भगवान उवाच- हे अर्जुन! जो सदा क्रोधवान होते हैं, उन्हें रक्त विकार होता है ,जो कुशील होते हैं, वे दरिद्र होते हैं,जो कुकर्मी ब्राह्मण को दान देते हैं, उन्हें खण्ड वायु होता है ।जो मनुष्य परायी स्त्री, गुरु की स्त्री पर कुदृष्टि करता है, उसे अधोगति होती है,और जो गौ और ब्राह्मण को लात मारता है, वह अंधा एवं पंगु होता है ।जो स्त्री अपने पुरुष को छोड़कर पराये पुरुष का संग करती है, वह बाल विधवा होती है।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! आप परम् ब्रह्म हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ! अब तक मैं आपको सम्बन्धी जानता था, अब परमेश्वर रूप मानता हूँ! हे परम् ब्रह्म गुरु दीक्षा कैसी होती है, कृपा कर बताइए!

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन! तुम धन्य हो,तुम्हारे पिता भी धन्य हैं, तथा तुम्हारी माता धन्य हैं,जिनसे तुम जैसा पुत्र रत्न पैदा हुआ!एवं गुरु दीक्षा पूछी ।हे अर्जुन सारे जगत के गुरु जगन्नाथ हैं, विद्या के गुरु काशी विश्वनाथ हैं,चारों वर्णों के गुरु ब्राह्मण और ब्राह्मणों के गुरु संन्यासी हैं, जिसने आप सब को त्याग कर मेरा ध्यान लगाया है,वे ब्राह्मण जगतगुरु हैं ।

हे अर्जुन बात ध्यान देकर सुनने की है, वे कौन गुरु हैं ,जिसने सभी इन्द्रियों को जीत लिया हो, जिसको सब संसार ईश्वर का रूप नजर आता हो। सब जगह से उदास हो, ऐसा गुरु करें जो परमेश्वर को जानने वाला हो! उस गुरु की पूजा सब तरह करें। हे अर्जुन जो गुरु का भक्त होता है, वह मेरा भक्त होता है । जो प्राणी गुरु के सम्मुख हो मेरा भजन करे उसका भजन सफल हो जाता है । जो गुरु से विमुख हो, उसे सात गाय मारने का पाप लगता है ।गुरु से विमुख प्राणी दर्शन करने योग्य नहीं है, जो गृहस्थ गुरु से विमुख है, वह चाण्डाल के समान है ।उसके हाथ का दिया हुआ देवता भी नहीं लेते, उसके सब कार्य निष्फल होते हैं ।कूकर, सूकर, गर्दभ और काक से भी सर्प की योनि बहुत खोटी है, इन सब से भी वह मनुष्य खोटा है, जो गुरु नहीं करता है| गुरु बिना गति नहीं होती, वह अवश्य नर्कों को जाता है। गुरु दीक्षा बिना प्राणी के सभी कार्य निष्फल होते हैं। जैसे सभी नदियों में गंगा नदी श्रेष्ठ है, सभी व्रतों में एकादशी व्रत श्रेष्ठ है, वैसे ही अर्जुन शुभ कार्यों में गुरु सेवा उत्तम है । गुरु दीक्षा बिना प्राणी पशु योनि पाता है। जो धर्म करता है, सदा पाप भोगता हुआ चौरासी लाख योनियों में घूमता रहता है ।

अर्जुन उवाच - हे भगवान! गुरु दीक्षा क्या वस्तु है?

श्री कृष्ण भगवान उवाच - हे अर्जुन तेरा जन्म धन्य है,गुरु दीक्षा दो ही वर्ण हैं,हरि

नाम इन अक्षरों को गुरु कहते हैं ।ये चारों वर्णों का जपना श्रेष्ठ है।हे अर्जुन जो गुरु की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है,और मेरी उस पर परम् प्रीति रहती है ,वह जन्म मरण से रहित हो नर्क नहीं भोगता|

जो प्राणी गुरु की सेवा नही करता वह साढ़े तीन सौ वर्ष तक नरक भोगता है| गुरु की निंदा करने वाले को घोर नरक होता है जो गुरु की सेवा करता है उसको कई अश्वमेध के समान पुण्य प्राप्त होता है गुरु की सेवा मेरी सेवा है|
हे अर्जुन हमारे तुम्हारे संवाद को जो भी प्राणी पढ़ेगें एवं सुनाएंगे वे गर्भ के दुख से बचेगें, उनकी चौरासी योनि कट जाएगी|

अमृत वाणी

१) नारायण हरि भजन में ये पांचों न सुहात, विषय भोग, निद्रा, हंसी जगत प्रीत, बहु -बात|

२) भगवान को छोड़कर कोई अपना नहीं, हम भगवान के हैं|

३) हम जहां जहां भी रहते हैं भगवान के दरबार में रहते हैं जो भी शुभ कार्य करते हैं भगवान का ही करते हैं|

४) भगवान के लिए प्रसाद से भगवान की ही जनों की सेवा करते हैं |

५) शिव की कृपा से सारा पाप तत्काल नष्ट हो जाता है |

६) दर्पण साफ करने से निर्मल हो जाता है वैसे ही भगवत्भक्ति से मन निर्मल हो जाता है |

७) जो दूसरों की सहायता करता है, भगवान उसकी सहायता करते हैं|

८) संसार में वही युवती / स्त्री पुत्रवती है जिसका पुत्र रघुनाथ जी का भक्त है नहीं तो जो राम से विमुख पुत्र से अपना हित जानता है वह तो बांझ ही अच्छी है | पशु की भांति उसका पुत्र प्रसव करना व्यर्थ है|

९) मोह के कारण ही मनुष्य इस संसार में कष्ट पाता है जो कि असत्य है| ब्रह्म ने जब इस शरीर को बनाया तो परमात्मा इतना खुश हुए कि अपना निवास बना लिया बोले यह मेरा मकान है यह आत्मा इसी में रहती है|

१०) आदमी को क्रोध आता है तो वह अंधा हो जाता है, न ज्ञान रह जाता है, न बुद्धि काम करती है, न विवेक कार्य करता है, क्रोध फिर रोके नही रूकता, नियंत्रण में नही रहता, लेकिन क्रोध कभी- कभी जागता है, हमेशा नही रहता, जैसे कुंभकर्ण छह महिने तक सोता था, एक दिन के लिए जगता था और भयंकर तबाही मचा देता था, क्रोध में यही सब होता है|

११) सांसारिक मोह के कारण ही मनुष्य ! मैं क्या करूं ? और क्या नहीं करूं ? इस दुविधा में फंस कर कर्तव्य पूत हो जाता है अतः मनुष्य को मोह और माया के वशीभूत नहीं होना चाहिए|

१२) शरीर नाशवान है और उसे जानने वाला अविनाशी है इस विवेक को महत्व देना और अपने कर्तव्य का पालन करना इन दोनों में से किसी भी एक उपाय को काम में लाने से चिंता शोक मिट जाते हैं|

पेज नं.२०

---

१३) निष्काम भावपूर्वक केवल दूसरों के लिए अपने कर्तव्य का तत्परता से पालन करने मात्र से ही कल्याण हो जाता है|

१४) कर्म बंधन से छूटने के दो उपाय हैं, *कर्मों के तत्व को जानकर निस्वार्थ भाव से कर्म करना* और *तत्वज्ञान अनुभव करना|*

१५) मनुष्य को अनुकूल परिस्थितियों के आने पर सुखी दुखी नहीं होना चाहिए|

१६) किसी भी साधना से अंतःकरण में समता आनी चाहिए समता आए बिना मनुष्य सर्वथा निर्विकार नहीं हो सकता|

१७) सब कुछ भगवान ही है ऐसा स्वीकार कर लेना सर्वश्रेष्ठ साधन है|

१८) अंतकालीन चिंतन के अनुसार ही जीव की गति होती है, अतः मनुष्य को हरदम भगवान का चिंतन करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए जिससे अंतकाल में भगवान की स्मृति बनी रहे|

१९) सभी मनुष्य भगवान प्राप्ति के अधिकारी हैं चाहे वह किसी वर्ण, आश्रम, संप्रदाय, देश - वेश आदि के क्यों न हो|

२०) इस जगत को भगवान का ही स्वरूप मानकर प्रत्येक मनुष्य भगवान के विराट रूप के दर्शन कर सकता है|

२१) जो भक्त शरीर इंद्रिय, मन, बुद्धि सहित अपने आपको भगवान में अर्पण कर देता है वह भगवान को परम प्रिय होता है|

२२) संसार में एक परमात्मा ही जानने योग्य है उसको जानने पर अमरता की प्राप्ति होती है|

२३) इस संसार का मूल आधार और अत्यंत श्रेष्ठ परम पुरुष एक परमात्मा ही है ऐसा मानकर अनन्य भाव से उनका भजन करना चाहिए|

२४) दुर्गुण दुराचारों से मनुष्य चौरासी लाख योनियों एवं नरकों में जाता है और दुख पाता है अंतत: जन्म - मरण के चक्र से छूटने के लिए दुर्गुण दुराचारों का त्याग करना आवश्यक है|

२५) मनुष्य श्रद्धा पूर्वक जो भी शुभ कार्य करें उसको भगवान का स्मरण करके उनके नाम का उच्चारण करके ही आरंभ करना चाहिए|

२६) सब ग्रंथों का सार वेद है, वेदों का सार उपनिषद है, उपनिषदों का सार गीता है और गीता का सार भगवान की शरणगति है जो अनन्य भाव से भगवान की शरण में जाता है, उसे भगवान संपूर्ण पापों से मुक्त कर देते हैं|

पेज नं.२१

गंगा महात्म

गंगा के नाम स्मरण मात्र से पातक, कीर्तन आदि से महापातक और दर्शन से अति पातक भी नष्ट हो जाता है | गंगा जी में स्नान, जलपान और पितरों का तर्पण करने से महापातकों की राशि समूह का प्रतिदिन क्षय होता रहता है| जिस प्रकार अग्नि के संसर्ग से रूई और सूखे तिनके क्षण भर में भस्म हो जाते हैं उसी प्रकार गंगा के स्पर्श मात्र से मनुष्य के सारे पाप एक क्षण में नष्ट हो जाते हैं| पुत्र पिता को, पत्नी अपने प्रियतम को, संबंधी अपने संबंधी को, तथा अन्य सभी भाई-बंधु भी एक दूसरे को त्याग देते हैं परंतु गंगा जी अपने भक्तों का परित्याग नहीं किया करती| हे गंगे मां ! आप श्री विष्णु जी का चरणोदक होने के कारण परम पवित्र हो तथा तीनो लोको में गमन करने वाली कहलाती हो, आपका जन्म धर्म मत है इसलिए तुम धर्मद्रवी के नाम से विख्यात हो|
हे जाह्नवी मेरे समस्त पापों को हर लो, धर्म से परिपूर्ण महादेवी भागीरथी तुम अपने शोभायमान रज कणों से और अमृत जल से मुझे श्रद्धा संपन्न बनाती हुई पवित्र करो| जो मनुष्य करोड़ों योजन दूर से "गंगा - गंगा" का शब्द पुकारता है वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक प्राप्त करता है विशेषकर इस कलयुग में सत्व गुणों से रहित मनुष्य को पाप से मुक्त होने तथा मोक्ष प्राप्त करने का दूसरा कोई साधन नहीं|

_*अच्छी बातें*_

जो जीव मनुष्य भगवान से विमुख है उसके कुल को, घर को, पुत्र को, आत्मा को और शरीर को बारंबार धिक्कार है, विपदा, विपदा नहीं है, संपदा, संपदा नहीं है, श्रीकृष्ण को भूल जाना ही विपदा और उन्हें स्मरण कर भजना ही संपदा है| सूर्य चंद्र के ग्रहण के समय काशी में करोड़ों गायों का दान, प्रयाग में गंगा युक्त कल्पवास और यशो में सुमेरु पर्वत के समान *स्वर्ण दान* भी भगवान नाम (राम - कृष्ण) सुमिरन के तुल्य नहीं है|

गुरुर्वाक्यं
शरीर अपने आप में एक दौलत है, इसी दौलत की बदौलत मनुष्य प्रभु को पाने के लिए प्रयासरत है| इस दौलत में बुरी लत मत आने देना, इस दौलत में बुरी लत आएगी यही लत सैकड़ों दुखों की कारण बन जाती है| यह दौलत प्रभु प्रदत्त एक उपहार है गुरु जीवन में अनेकों बनते हैं लेकिन सद्गुरु आत्मा का कल्याण करने वाला एक ही होता है|
माँ प्रथम गुरु है, परमात्मा परम गुरु है, माँ - बाप जन्म देते हैं इसलिए प्रथम गुरु हैं, परंतु सद्गुरु तो जीवन देते हैं इसलिए परम गुरु है | माँ - बाप ने चलना सिखाया, परन्तु गुरु तो जीना सिखाता है, गुरु के पास जीवन दर्शन का बोध होता है, और जहाँ बोध होता है वहाँ क्रोध और विरोध नहीं होता|

पेज नं.२२

सूर्य की तरह पानी लो, सूर्य घड़े से पानी लेता है, नदी, सरोवर, कुआँ, समुद्र, सभी जगह से पानी लेता है, लेकिन

अपने पास रखता नहीं | याद रखो बादल जल लेकर काला हो जाता है, पर वर्षा करके सफेद निर्मल साफ हो जाता है| तुम भी गरीबों, संतो पवित्र धर्म इत्यादि के लिए धन को दान करके पवित्र हो जाओ| नीति से कमाओ, रीति से खाओ, और प्रीति से बरसा दो, अगर चाहते हो कि लक्ष्मी की बहन दरिद्रा तुम्हारे पास ना आए तो जीवन को प्राणि सेवा में लगाओ, देवी तत्वों से ही ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है तथा तत्वों से ही जीवों का पालन पोषण और तत्वों से ही जीव ब्रह्मण्ड में विलय हो जाता है| इस कारण उस ब्रह्मांड के निर्माण में तत्व ही मुख्य होता है, पुनः माता पार्वती पूछती हैं कि महादेव ! तत्वों के जानने वाले तत्व वादियो ने तत्व को ही ब्रह्मांड का मूल निश्चय किया है| तत्ववादियों के द्वारा भी सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड का निर्माण तत्वों से ही हुआ है|

भगवान ने कहा : निरंजन निराकार जो परमात्मा है उन्हीं से आकाश उत्पन्न हुआ और आकाश से वायु की उत्पत्ति हुई, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी हुई । यह पांच तत्व प्रत्येक पांच पांच प्रकार में विस्तृत हो गए उन्हीं पांचों तत्वों से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई उन्हीं से इसका पालन होता है और उन्हीं में यह लय हो जाता है ।

चौपाई
क्षिति जल पावक गगन *समीरा|*
पंच रचित यह अधम शरीरा|

हे देवी इस पंचतत्वमय शरीर में उक्त पांचो तत्व सूक्ष्म रुप से विद्यमान है, जिन्हें तत्वों को जानने वाले योगी ही जान पाते हैं|
शरीर में जो विद्यमान ओंकार आदि स्वरों के उच्चारण के मुख्य स्वर हैं, उन्हें कहता हूं जिनका ज्ञान होने से, हंस चार बार श्वाँस के भीतर होने और बाहर निकलने में ध्वनि होती है।
अ हम यह ध्वनि होती है वह मैं ही हूं ॐ ऐसा जो उच्चारणहोता है उसी से भूत भविष्य और वर्तमान का ज्ञान प्राप्त होता है।

उत्थान एक विज्ञान

भौतिक लाभ कोई भी व्यक्ति प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर इस अकाट्य सत्य का अनुभव कर सकता है कि प्रातः कालीन वायुमंडल शरीर और इंद्रियों तथा मन को प्रिय लगने वाला एवं स्वास्थ्य वर्धक होता है ।इसका कारण यह है कि रात्रि में तारों और चंद्रमा के शीतल प्रकाश के संयोग से वातावरण शीतल वायु में प्राण वायु यानी कि ऑक्सीजन की मात्रा प्रचुर मात्रा में होती है इसलिए शास्त्र का रोने उस समय की वायु को वीर वायु की संज्ञा दी है । प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठाने वाले को वर्ण कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी स्वास्थ्य और आयु की प्राप्ति सरलता से हो जाती है। अतः लगभग 4:00 बजे जग जाना चाहिए।

आध्यात्मिक कार्य :

लाभ
ब्रह्म मुहूर्त में उठकर लघुशंका करके हाथ धोकर कुछ समय तक ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए । ब्रह्म के ध्यान के लिए इससे उपयुक्त और कोई समय हो ही नहीं सकता है क्योंकि रात्रि भर विश्राम की वजह से मन इंद्रियां शांत होती है तथा समस्त ब्रह्मांड का वातावरण बिल्कुल शांत होता है ।
इसी समय बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी ब्रह्म ध्यान करते हैं उनके सम्मुख ध्यान की तरंगे हम लोगों के ध्यान में

सहायता प्रदान करती है ।
अतः यह समय ब्रह्म ध्यान के लिए अत्यंत प्रभावशाली है।

माता पार्वती भगवान भोलेनाथ से कहती है:
देव देव महादेव कृपा कृत्वा मनो परी
सर्व सिद्धि कर्म ज्ञान कथस्व मम प्रभु

हे देवों के देव महादेव मुझ पर कृपा करके सब सिद्धियां प्रदान करने वाला ज्ञान मुझसे कहें ।

महादेव ने कहा देवी:
तत्व वाद ब्रह्मांड उत्पन्न तत्व परिवर्तन ते तत्व विलेयते देवी तत्वाद ब्रह्मांड निर्णय:|

देवकार्य एवं पितृ कार्य

देव कार्य उत्तर मुख एवं पितृ कार्य दक्षिण मुख करके करना चाहिए।
नीला लाल अथवा काला वस्त्र पहनकर देव कार्य नहीं करना चाहिए अन्यथा विष्णु भगवान नाराज हो जाते हैं और करने वाले का पतन होता है। केश खोलकर आचमन और पूजन नहीं करना चाहिए । तांबा मंगल स्वरूप पवित्र और भगवान को अत्यंत प्रिय है। तांबे के पात्र में रखकर जो भी वस्तु भगवान को अर्पण किया जाता है उसे भगवान प्रसन्न होकर ग्रहण करते हैं ।
चांदी पितरों को प्रिय है चांदी को देव कार्य से दूर रखना चाहिए । भगवान की उपासना के समय दीपक का स्पर्श हो जाने पर हाथ धो लेना चाहिए। शालिग्राम तुलसी और शंख इन तीनों को साथ में रखने पर भगवान अति प्रसन्न होते हैं। शिवलिंग पर चढ़े फल, फूल, नैवेद्य को ग्रहण करना निषेद्य है परंतु यदि शालिग्राम से उसका स्पर्श करा दिया जाए तो वह ग्रहणीय हो जाता है। घर में अंगुष्ठ से लेकर एक बित्ता तक की मूर्ति शुभ है, उससे बड़ी मूर्ति शुभ नहीं ।
कार्तिकेय को दीप प्रिय है, सूर्य को नमस्कार प्रिय है, विष्णु को स्तुति प्रिय है और शिव को अभिषेक प्रिय है। अतः इन देवों को प्रसन्न करने के लिए इनके प्रिय कार्य करने ही चाहिए। विष्णु के मंदिर की चार बार, देवी मंदिर की एक बार, सूर्य मंदिर की सात बार और शिव मंदिर की आधी परिक्रमा करनी चाहिए। पूजा हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके ही करें। श्राद्ध के द्वारा प्रसन्न हुए पितृगण मनुष्यों को पुत्र-धन, विद्या, आयुष, आरोग्य, अलौकिक सुख, मोक्ष तथा स्वर्ग आदि प्रदान करते हैं।

शुक्ल पक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्ष और पूर्वाहन की अपेक्षा अपराह्न का समय श्राद्ध के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। श्राद्ध एकांत में गुप्त रूप से करना चाहिए क्योंकि नीच मनुष्य की दृष्टि पड़ जाने पर वह पिण्ड पितरों को नहीं प्राप्त होता।
श्राद्ध यदि नदी, आश्रम, गौशाला, शिव मंदिर में किया जाए तो करने वाले को अक्षय फल प्राप्त होता है। श्राद्ध का भोजन स्त्रियों को नहीं करना चाहिए । जिस श्राद्ध में 10000 बिना पढ़े हुए ब्राह्मण भोजन करते हैं वहां यदि वेदों का ज्ञाता एक ही ब्राह्मण भोजन करके संतुष्ट हो जाए तो उन 10,000 ब्राह्मणों के बराबर फल प्राप्त होता है।
श्राद्ध कर्म काल के समय आए हुए अतिथि का अवश्य ही सत्कार करना चाहिए ऐसा ना करने पर वह श्राद्ध कर्म के संपूर्ण फल को नष्ट कर देता है।

पूजा के कुछ प्रमुख तत्व

पूजा हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके ही करें ।
रंगीन पीला वस्त्र जरूर रखें। आचमन से जूठा हाथ सिर में ना पोछें।
सर्वप्रथम सूर्योपासना तत्पश्चात गणेश गौरी शिव एवम विष्णु जी की पूजा करें ऐसा करने से घर में धन वैभव शांति बनी रहेगी| प्रयोग अवश्य करें ।
सूर्य देव को शंख से अर्ध नहीं देना चाहिए ।
ताम्रपात्र में रोली काला तिल एवं थोड़ा सा गुड़ मिलाकर अर्घ दें । इससे आरोग्यता प्राप्त होती है ।
तुलसी का पत्ता नहीं वरण दल (3-4 पत्तियों का समूह दल कहलाता है)उसे ग्रहण करें।

बिना स्नान किए तुलसी को ना तोड़े ।

रवि, मंगल, एकादशी, द्वादशी संक्रांति तथा सायंकाल को तुलसी नहीं तोड़ना चाहिए।

घर में सेंधा नमक जरूर रखें इससे लक्ष्मी स्थिर रहती है।

साबुत धनिया, 5 गांठ हल्दी, 11 कमलगट्टा एवं एक नमक का गुटका पोटली बनाकर तिजोरी में रखें, कपड़ा लाल होना चाहिए ।

कर्ज मुक्ति के लिए 11 पत्ते पीपल के मंगलवार को लाकर लाल चंदन से राम राम लिखकर चालीसा हनुमान अष्टक 21 पाठ करें ।देसी घी का चौमुख दीपक जलाएं पूजा के बाद उन पत्तों को हनुमान मंदिर में चढ़ा कर हनुमान जी से कर्ज मुक्ति की प्रार्थना करें। शीघ्र ही कर्ज समाप्त होगा।

बच्चे की बुद्धि यदि कमजोर हो तो रात्रि भोजन करने के पश्चात इलायची, सौंफ, लौंग और चीनी मिलाकर रोटी में लपेट कर किसी बैल को खिलाएँ, ऐसा लगातार 11 दिन करने से बुद्धि प्रखर होगी|

धन की हानि नहीं रुक रही है तो रात को घर की चौखट के बाहर गुलाल गिराकर उसके ऊपर घी का दीपक जला दें और लक्ष्मी जी से धन हानि रोकने तथा समृद्धि प्रदान करने की बात कहें।
यह प्रयोग तब तक करें जब तक कार्य सिद्ध ना हो जाए।

किसी लक्ष्मी नारायण मंदिर में सायंकाल खीर में केवल मिश्री डालकर 9 वर्ष तक की 11 कन्याओं को खिलाएं और लाल वस्त्र दान देवें।
इससे अधिक आर्थिक लाभ होगा कोई तन से दुखी,

कोई मन से दुखी, कोई धन बिन दुखी, थोड़े थोड़े सब दुखी, बस सुखी राम के दास बापू जैसे संत के चरण में शरण मिल जाए तथा जिसके पूर्व जन्म के संस्कार के पुनः उदय हो जायें वही बच सकता है अन्यथा इसका कलिकाल में राजा प्रजा सेठ साहूकार धनवान कंगाल सभी दुखी नजर आ रहे हैं।

आत्म चिंतन

जीव तब तमाम झंझावत को झेलते हुए पुनः माता के गर्भ में आया तो उसे पुनः पीड़ा का एहसास हुआ क्योंकि गर्भ का माहौल बदबू भरा मल-मूत्र का भंडार, उसमें उल्टे मुख पड़ा हुआ, समय बिताने को बेबस होता है, धीरे-धीरे समय काटता हुआ वह समय आता है जब वह अत्यधिक पीड़ा जलन नाना प्रकार से कष्टित होता है। तब उसे परमात्मा की याद आती है और गर्भ की उस पीड़ा से बचाने की प्रार्थना करता है एकदम आर्त भाव में क्योंकि परमपिता परमात्मा परम दयालु है उसके ऊपर दया करके ज्योति स्वरूप दर्शन देता है उस समय जीव को आवाज सुनाई पड़ती है। उसे केवल ज्योति के दर्शन होते हैं। परमात्मा उस जीव से कहते हैं कि हे मूढ़ जीवात्मा! इस पीड़ा से मुक्त होने का तेरे पास उपाय है और वो है मेरा चिंतन, भजन, सुमिरन, इसके अलावा पीड़ा से बचने का तेरे पास और कोई दूसरा विकल्प नही है। जीव जब जन्म लेता है उसी समय से ईश्वरीय माया का विस्तार शुरु होता है। सबसे पहले क्षुधा जाग्रत होती है, माताएँ, गाय, बकरी जो भी उपलब्ध होता है उसके दूध को रुई इत्यादि की सहायता से मुख पर लगा देती है थोड़ा दूध पान करने पर संतुष्ट हो जाने पर शांत हो जाता है तो सबसे पहले परमात्मा की भूख और अंत में संतोष जीव के साथ आये परन्तु जैसे - जैसे जीव की उल्टी गिनती प्रारम्भ होती है वैसे - वैसे उसकी माया का दायरा बढ़ता जाता है और संतोष गायब हो जाता है।
माता से मोह, पिता से मोह, भाई से मोह, नाते, रिश्तेदार, रुपया, पत्नी, बच्चे, मकान, गाड़ी, नौकर- चाकर इत्यादि में पड़कर जीव अपने उस वचन को भूल जाता है जो गर्भकाल में परमात्मा को देकर आया हुआ था। ईश्वर के पास दो स्त्रियाँ हैं एक माया और एक भक्ति । ईश्वर जीव से कहता है कि यदि तुम मुझे नचाना चाहते हो तो मेरी भक्ति को ले लो यदि खुद नाचना चाहते हो तो माया से अतिशय प्रेम है जिसका परिणाम काठ और चंदन की तरह हो जाता है।

माता पिता बाल कहि बोलावहि

उदर भरे सोइ ज्ञान सिखावहि- यदि मोक्ष प्राप्त करने का ज्ञान बताते तो बात बन जाती, अरे भाई पेट भरना अपना काम नही यह तो परमात्मा की जिम्मेदारी है। वह कैसे भी करके हमें भूखा जगाता है सुलाता नही। अगर ऐसा नही होता तो न जाने कितने जन्मों के पुण्य इकट्ठे करके परमात्मा ने हमें यह सुन्दर मानव तन प्रदान किया|

और कहा कि ए जड़ जीव इस सुन्दर शरीर से अपने जन्म और मरण के बंधन से मुक्त होना परन्तु हमको यहाँ आकर भटकाव हो गया और हम अपने विनाश का बीज बोते जा रहे हैं। अब भी समय है हम किसी सच्चे सद्गुरु की शरणगति को प्राप्त हो जाए तो कल्याण हो जाएगा अन्यथा पुनः विनाश सुनिश्चित है फिर उसी चौरासी में भटकना पड़ेगा यह अटल सत्य है। इस कलिकाल में जीवन का सदा एक ही ध्येय रहता है, सुख और शान्ति। ज्यों-ज्यों सुख की झलक वस्तुओं में नज़र आती है त्यों - त्यों विषय वासना और बढ़ती जाती है।
आज के युग में जहाँ गुरु मिलना दुर्लभ है इसी प्रकार शिष्य बनना भी कठिन है। केवल मुँह से कह देने मात्र से कोई शिष्य नही बन सकता उसके लिए शिष्य को प्राणों की बाजी लगानी पड़ती है, तन मन धन सब गुरु के चरणों में न्यौछावर करना पड़ता है। अपना सर्वस्व देकर ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक हो जो वही पूर्ण शिष्य है। गुरु ही ईश्वर है ईश्वर के समान नही, साक्षात् परम ब्रह्म परमात्मा ही है जब तक ऐसा भाव नही जागृत होता तब तक शिष्य शिष्य नही हो सकता। परमार्थ का प्रारम्भ गुरु सेवा से ही होता है। अभी तक केवल पत्नी बच्चों की जिम्मेदारी थी परंतु ऐसे धर्मात्मा गुरु के पास पहुँचने के बाद संसार के रिश्ते भी उनके आगे नगण्य हो गये।
सांसारिक किसी भी लाभ के लिए उनसे कोई फरियाद नही केवल परमात्मा से मिलने की प्यास और कुछ नही। आरंभ में विश्वास नही होता परन्तु जैसे - जैसे संगति पुरानी होती जाती है अभ्यास का क्रम बढ़ता जाता है। संसार से मोह कम होता जाता है और उनसे संबंध प्रगाढ़ होते जाते हैं। सद्गुरु देव की शरणगति प्राप्त होने पर

संशयात्मक बुद्धि नष्ट हो जाती है। और लौकिक और पारमार्थिक लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अपने मैं पन को दूर करना ही परमार्थ है। गुरु में अहंकार आयेगा तो उसका पतन हो जायेगा और शिष्य में अहंकार आयेगा तो वह उठाकर फेंक दिया जायेगा इसीलिए गुरु और शिष्य को सेवाव्रती होना परम आवश्यक है।
एक तरफ हिदायत है कि गुरु शिष्य का कुछ भी ग्रहण न करें तो दूसरी ओर यह आदेश है कि तन, मन, धन सर्वस्व गुरु को अर्पण कर दे, गुरुप्रसाद से जिनका अंतःकरण शुद्ध हो चुका है, अंदर में गुरु सेवा का भाव समाया है, ऐसे साधक अथवा शिष्य को अन्य किसी शिक्षा ज्ञान की आवश्यकता नही है।

सीताराम चरण मति मोरे।
अनु दिन बढ़इ अनुग्रह तोरे।

श्री गुरु जी का संक्षिप्त परिचय

चौ०
धन्य सो जग जँह सुरसरि धारा।
सर सइ ब्रह्म विचार प्रचारा|

धन्य है वह कुल जहां ऐसी महान विभूतियों का अवतरण होता है| भारत भूमि में प्रयाग के सन्निकट मिश्रपुर गांव आपकी जन्म भूमि है, यहां से लगभग डेढ़ किलो मीटर की दूरी पर एक गांव पकरी सेवार यह ठीक गंगा के दक्षिण तट पर ही है, यहां पर सुंदर आश्रम (इस आश्रम के निर्माता आपके पिता एवं गुरुजी ब्रह्मलीन श्री उमापति जी महाराज थे, यह भी एक अद्वितीय संत थे इनका भी जीवन बड़े ही संयमित ढंग से शुरू हुआ बालकों के जन्म उपरांत लगभग 50 वर्ष की आयु में विरक्ति को प्राप्त हुए| एक दिन अचानक घर छोड़कर गायब हो गए, परिवारीजन परेशान हो गए, बड़ी खोजबीन की गई और उन्हें घर लाया गया, उनके घर आने की शर्त यह थी कि वह गंगा तट पर एक आश्रम बनवाया जाए, घर वाले मान गए और वहीं गंगा के तट पर एक आश्रम एवं हनुमान लाल जी का एक सुंदर सा मंदिर बनाएंगे वहीं पर आ० महाराज जी का रहना शुरू हो गया संत महात्माओं का आगमन शुरू हो गया, इस प्रक्रिया को देखकर सदगुरुदेव का कभी - कभी उसी आश्रम पर आना जाना प्रारंभ हुआ| वही जाकर संतों की सेवा करते थे, समय मिलने पर ऐसे ही बैठे रहते थे| किसी से कुछ ना बोलते और ना ही कुछ करते एक दिन पिताश्री उमापति जी ने कहा कुछ किया धरा करो, जिससे जीवन चलना है तो आपने कहा ! कि क्या करूं कोई काम हो तो बताओ तो उन्होंने कहा खूब पढ़ो, फिर आपने कहा यह भी कोई काम है, कुछ और बताओ जिसे मैं कर सकूं फिर पिता जी ने कहा तुम ही बताओ तुम क्या कर सकते हो, फिर आपने कहा भगवान की भक्ति, पूजा| उन्होनें पूछा भगवान को जानते हो या कभी देखा है, तो आपने कहा जानता और देखा तो नहीं परंतु देखने और जानने की प्रबल इच्छा है, पिताश्री ने कहा कि इस मंदिर में विराजे हैं इन्हें जानते हो कौन है, आपने कहा राम भक्त हनुमान लाल जी हैं फिर उन्होंने कहा बस पहले तुम भक्तों की भक्ति करो भगवान अपने आप मिल जाएंगे और उस दिन से आज के दिन तक निरंतर हनुमान जी जी महाराज का सतत पूजन आराधना चलता रहा और पिताश्री का आदेश यही तुम्हारा सब कुछ है, उनकी बातों को शिरोधार्य कर उसका अनुपालन आज तक कर रहा हूं| *करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान* वाली कहावत सिद्ध हुई आप वलसाड गुजरात आ गए यहां पर एक छोटे से मंदिर में स्थान बनाया वहीं रहते हुए, आपने अनेकों लावारिस लाशों का दाह संस्कार किया, अनेकों असहाय मरीजों का इलाज करवाते, तमाम वस्त्रहीनों को अपना ही वस्त्र उतार कर दे दिया करते थे, लोगों ने उन्हें

पागल की उपाधि दे डाली, मगर उन्हें क्या पता संत हृदय नवनीत समाना संत का हृदय मक्खन की तरह नरम होता है| संत जो होते हैं, वे किसी की पीड़ा नही देख सकते| आज संत बनना आसान है परंतु संतत्व प्राप्त कर पाना, आसान नहीं है संत सहहिं दुख परहित लागी, निज हित हेतु असंत अभागी|
संत तो परदुख से अत्यन्त द्रवित हो जाता है, फिर भी जीव हो उसकी सेवा सहायता करने से पीछे नहीं हटते| वलसाड के उस स्थान पर बैठे-बैठे अनेकों का उद्धार किया और गुरु से अभिसिंचित किया हुआ अन्य क्षेत्र भी आपके साथ - साथ लगा रहता है|

आप जहां भी रहे एक हो या अनेक हो कोई भी भूखा नहीं रहता, प्रसाद पाकर ही रहता है, अब यह कहां से पूरा होता है, यह तो गुरुदेव ही जाने| गुरुदेव का मानना और कहना है कि अन्न दान एक महान दान है| इसके समान कोई दान ही नहीं है|

गुरुदेव ने 7 ×10 फीट के मंदिर में सात दिवसीय अनुष्ठान किया और 7 दिन तक वह बाहर नहीं निकले, अब उनका संकल्प क्या था यह तो वही जाने परंतु मेरा मानना है कि यह विशाल आश्रम उसी संकल्पित अनुष्ठान का सुपरिणाम है|

मुद मंगलमय संत समाजू|
जो जग जंगम तीरथ राजू|

संत भगवान जहां भी रहते हैं, वह स्थान तीर्थ स्वरूप हो जाता है, ऐसे स्थानों का दर्शन मात्र ही परम शांति का प्रतीक होता है| जहां पर नदी, गांव ब्राम्हण, संत और देवालय स्थापित हो, वहां परमपिता परमेश्वर विराजते हैं एवं उनकी कृपा का संचार हुआ करता है| अतः ऐसे स्थानों का दर्शन जीवो (मानव मात्र) को करना ही चाहिए|

संत मिलन को जाइए तज माया अभिमान |
ज्यों- ज्यों पग आगे बढ़त कोटिन यज्ञ समान|

हनुमंत लाल महाराज की साधना में लीन जय गुरुदेव के मार्ग को दांपत्य सूत्र भी बाधक न बना पाया, उस जवाबदारी को निभाते हुए विरक्ति को प्राप्त हुए|

हनुमंत लाल जी की ऐसी अनुकंपा हुई कि वे अपने आप ही अलग - अलग हो गए| साधना मार्ग दिनों दिन अपने चरम पर पहुंचता जा रहा है| कृपा तो ऐसी है कि जब भी हनुमंत लाल जी के बारे में चर्चा होती हैं, भाव विह्वल, हृदय द्रवीभूत हो जाता है एवं नयन सजल होते हैं, उस समय यदि कोई आशीर्वाद प्राप्त कर ले, तो उसकी तमाम बाधाएं स्वयं समाप्त हो जाती हैं| कई लोगों को आशीर्वाद प्राप्त हुआ जिसके कारण उनका कल्याण भी हो चुका है, इसके बावजूद भी गुरुदेव ने किसी को भी अपनी शिष्यता प्रदान नहीं की| दीक्षा मांगने पर वे कहते हैं पहले शिष्यता
के पात्र तो बनो|

गुरु पूर्णिमा का अवसर था, तमाम संत भगवान भी उपस्थित थे, काफी लोगों की भीड़ थी| गुरु पूजन के बाद कुछ दाम्पत्यों ने दीक्षा की प्रार्थना की ! इस पर गुरुदेव ने जो कहा वह वास्तव में विस्मय भरा है क्योंकि आज के इस घोर कलयुग में शिष्य बनाने की लोगों में होड़ लगी हुई है| दीक्षा देने की बड़ी - बड़ी दुकानें खुली है उनका

अस्तित्व इस बात पर निर्भर है कि आपके पास कितने शिष्य हैं परंतु हमारे गुरुदेव ने जो उत्तर दिया वह अनुकरणीय है, उन्होंने कहा ! भगवान इस शरीर रूपी बोतल में अहंकार, लोभ, काम रूपी जो मदिरा भरी है, उसे खाली करो| खाली कैसे होगी जब बोतल गिरेगी (झुकेगी) जब झुकेगी तो अपने आप खाली होगी, तो उसे निर्मल अश्रु रूपी जल से धोना पड़ेगा, भावना रूपी अग्नि पर तपना पड़ेगा और निरंतर गुरु मूर्ति को हृदय स्थल पर धारण करना पड़ेगा, तब जाकर गुरुदेव को खोजना| फिर कहना नहीं पड़ेगा वह स्वयं ही तुम्हें अपना बना कर अपने सदृश कर देंगे| आप अपने स्वयं के गुरु हो! परंतु तब, जब आप संपूर्ण शिष्य बन जाओगे, लोग कहते हैं कि आत्म कल्याण के लिए गुरु बनना है, लेकिन किसको बनाऊं समझ में नहीं आ रहा है|

पेज नं.२९

कौन सच्चा गुरु है कोई मिलता ही नहीं लेकिन गुरुदेव कहते हैं कि भाई तुम गुरु मत खोजो, सही शिष्य बन जाओ, गुरु स्वंय तुम्हें खोज लेगा| सत संग खोजते-खोजते जब कुमति छूटेगी, तो किसी एक पर तुम्हारी प्रीत बढ़ेगी, जब प्रीत बढ़ेगी तो उनकी बातों का अनुसरण करोगे, समर्पण भाव पैदा होगा, फिर गुरुदेव अपने आप ही थोड़ी बहुत कमियों को दूर करके, अहंकार रूपी इमारत को ध्वस्त करके पुनः उसे बनाना प्रारंभ कर देंगे, क्योंकि गुरु पहले मिटाता है पुनः बनाता है तो पहले गुरु भक्ति करो फिर वह स्वयं ही अपना लेगा| *जिसे शिष्य याद करें वह गुरु भक्त* और जिसे गुरु याद करें वह शिष्य| गुरुदेव की इन बातों को सुनकर मैं तो दंग रह गया पुनः गुरुदेव ने कहा विश्व गुरु ब्राह्मण, ब्राह्मण गुरु सन्यासी, सन्यासी गुरु अविनाशी इन बातों को सुनकर मैं अभिभूत हो गया मैं तो एक बार यहां दर्शन हेतु आया था, गुरुदेव की कृपा का पात्र बन गया अब तो प्रत्येक गुरु पूर्णिमा एवं अन्य शुभ अवसरों पर यहां आना मेरे लिए बहुत ही हितकर है, यहां रहकर जप-तप भजन करने से चित्र स्वंयमेव एकाग्र हो जाता है, मैं धन्य हूं कि मेरे जैसे अधम जीव को भी गुरुदेव ने अपना कृपापात्र बना लिया, इसी सीताराम आश्रम में गुरुदेव की कृपा प्रसाद एवं सत्संग रूपी गंगा का प्रवाह निरंतर मिलता रहता है, यह तो मेरी अनुभूति का विषय है जो मुझे प्राप्त हुआ है और अब तो यही इच्छा है कि हम सभी भक्तजन यही रहकर गुरुदेव द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए उनकी सेवा में जीवन भर लगे रहें एवं उनके द्वारा प्राप्त साधना प्रसाद की धारा को पूरे विश्व में प्रवाहित करें, ताकि मृत्युलोक गुरुदेवमय हो जाए और दसो दिशाओं में व्याप्त हो जाए तथा जीवन उपरांत जब कभी पुनः शरीर मिले तो ऐसे सद्गुरु के चरणों का अनुरागी रहूं| परम पूजनीय वंदनीय प्रातः स्मरणीय गुरुदेव रामदास महाराज जी के चरणों में बारंबार दंडवत प्रणाम है|

जय सियाराम जय गुरुदेव

पेज नं.३०

राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली गली ।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली ॥

दोलत के दीवानों सुन लो एक दिन ऐसा आएगा,
धन योवन और रूप खजाना येही धरा रह जाएगा ।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली गली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली ॥

प्यारे मित्र सगे सम्बंधी इक दिन तुझे भुलायेंगे,
कल तक अपना जो कहते अग्नि पर तुझे सुलायेंगे ।
जगत सराय दो दिन की है, आखिर होगी चला चली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली ॥

क्यूँ करता है तेरी मेरी, छोड़ दे अभिमान को,
झूठे धंदे छोड़ दे बन्दे जप ले हरी के नाम को ।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कलि कलि,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली ॥

जिस जिस ने यह हीरे लुटे, वो तो मला माला हुए,
दुनिया के जो बने पुजारी, आखिर वो कंगाल हुए ।
धन दौलत और माया वालो, मैं समझाऊं गली गली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली ॥

प्रभु की उदारता

सियाराम बिना दुख कौन हरे दीनों का पालन कौन करे,
तुम दीनदयाल कहते हो दीनों के कष्ट मिटाते हो,
हम दीन दुखी हैं शरण तेरे हम सबका पालन कौन करें,
पृथ्वी का भार घटाने को भक्तों का मान बढ़ाने को
त्रेता युग में अवतार लिया भक्तों का पालन कौन करें,
गौतम की नारी अहिल्या को प्रभु भवसागर से पार किया,
हम याचक तेरी पद रज के हम सबका पालन कौन करें,
केवट से अपने चरणों को धुलवाए थे सुरसरि तट पर,
किया भवसागर से पार उसे हम सबका तारण कौन करें,
शबरी के आश्रम में जाकर नवधा भक्ति थी बतलाई,
निज धाम दिया उसको भगवन दीनो का पालन कौन करें,
लंका से भक्त विभीषण भी आए थे तेरी शरणागत,
शरणागत की प्रभु लाज रखो दीनों का पालन कौन करें|

आग्रह

मुझे अपनी शरण में ले लो राम ले लो राम) -२

(लोचन मन में जगह न हो तो) -२
जुगल चरण में ले लो राम ले लो राम मुझे ...
जीवन देके जाल बिछाया रच के माया नाच नचाया

(चिन्ता मेरी तभी रुकेगी) -२ जब चिन्तन में ले लो राम ले लो राम मुझे ...
तू ने लाखों पापी तारे मेरी बारी बाज़ी हारे बाज़ी हारे (मेरे पास न पुण्य की पूँजी) -२
पदपूजन में ले लो राम मुझे ...

राम हे राम राम हे राम दर दर भटकूँ , घर घर अटकूँ कहाँ कहाँ अपना सर पटकूँ इस जीवन में मिलो न तुम तो राम हे राम
इस जीवन में मिलो न तुम तो मुझे मरण में ले लो राम ले लो राम मुझे ...

जय हो जय तो तुम्हारी जी बजरंगबली

जय हो जय तो तुम्हारी जी बजरंगबली,
ले के शिव रूप आना गज़ब हो गया।
त्रेता युग में थे तुम आये, द्वार में भी,
तेरा कलयुग में आना गज़ब हो गया।।

बचपन की कहानी निराली बड़ी,
जब लगी भूख बजरंग मचलने लगे।
फल समझ कर उड़े आप आकाश में,
तेरा सूरज को खाना गज़ब हो गया।।

कूदे लंका में जब मच गयी खलबली,
मारे चुन चुन के असुरों को बजरंगबली।
मार डाले अक्षे को पटक के वोही,
तेरा लंका जलाना गज़ब हो गया।।

आके शक्ति लगी जो लखन लाल को,
राम जी देख रोये लखन लाल को।
लेके संजीवन बूटी पवन वेग से,
पूरा पर्वत उठाना गज़ब हो गया।।

जब विभिक्षण संग बैठे थे श्री राम जी,
और चरणों में हाजिर थे हनुमान जी।
सुन के ताना विभिक्षण का अनजानी के लाल,
फाड़ सीना दिखाना गज़ब हो गया।।

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का

ये तन है जंगल की लकड़ी
आग लगे जल जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है कागज की पुड़िया
हवा चले उड़ जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है माटी का ढेला
बूँद पड़े गल जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है फूलों का बगीचा
धुप पड़े मुरझाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है कच्ची है हवेली
पल में टूट जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है सपनो की माया
आँख खुले कुछ नाही, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

दुनिया में देव हजारो हैं

दुनिया मे देव हजारो हैं, बजरंग बली का क्या कहना
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना
दुनिया मे देव हजारो हैं, बजरंग बली का क्या कहना

ये सात समुन्दर लांग गए और गढ़ लंका मे कूद गए
रावन को डराना क्या कहना, लंका को जलाना क्या कहना
दुनिया मे देव हजारो हैं बजरंग बली का क्या कहना

जब लक्ष्मन जी बेहोश हुए, संजीवनी बूटी लाने गए
परबत को उठाना क्या कहना, लक्ष्मन को जिवाना क्या कहना
दुनिया मे देव हजारो हैं बजरंग बली का क्या कहना

'बनवारी' इनके सीने मे सिया राम की जोड़ी रहती है

ये राम दिवाना क्या कहना, गुण गाये जमाना क्या कहना
दुनिया मे देव हजारो हैं बजरंग बली का क्या कहना|

पेज नं.३३

दुनिया चले ना श्री राम के बिना

दुनिया चले ना श्री राम के बिना,
राम जी चले ना हनुमान के बिना।

जब से रामायण पढ़ ली है, एक बात मैंने समझ ली है,
रावन मरे नी श्री राम के बिना, लंका जले ना हनुमान के बिना॥

लक्षण का बचना मुश्किल था, कौन बूटी लाने के काबिल था,
लक्षण बचे ना श्री राम के बिना, बूटी मिले ना हनुमान के बिना॥

सीता हरण की कहानी सुनो, बनवारी मेरी जुबानी सुनो,
वापिस मिला ना श्री राम के बिना, पता चले ना हनुमान के बिना॥

बैठे सिंघासन पे श्री राम जी, चरणों में बैठे हैं हनुमान जी,
मुक्ति मिला ना श्री राम के बिना, भक्ति मिले ना हनुमान के बिना॥

श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में

नहीं चलाओ बाण व्यंग के ऐह विभीषण
ताना ना सेह पाऊं, क्यों तोड़ी है यह माला,
तुझे ए लंकापति बतलाऊं
मुझ में भी है तुझ में भी है, सब में है समझाऊं
ऐ लंका पति विभीषण ले देख मैं तुझ को आज दिखाऊं

पेज नं.३४

- जय श्री राम -

श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में,
देख लो मेरे मन के नागिनें में ।

मुझ को कीर्ति न वैभव न यश चाहिए,

राम के नाम का मुझ को रस चाहिए।
सुख मिले ऐसे अमृत को पीने में,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में॥

अनमोल कोई भी चीज मेरे काम की नहीं
दिखती अगर उसमे छवि सिया राम की नहीं

राम रसिया हूँ मैं, राम सुमिरन करू,
सिया राम का सदा ही मै चिंतन करू।
सच्चा आंनंद है ऐसे जीने में श्री राम,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में॥

फाड़ सीना हैं सब को यह दिखला दिया,
भक्ति में हैं मस्ती बेधड़क दिखला दिया।
कोई मस्ती ना सागर मीने में,
श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में॥

छंद~चौपाई
श्री राम जी स्वप्न में

रात स्वप्न आये रघुराई|
दुख की कह सब कथा सुनाई||
बोले त्रेता ले अवतारा|
रामराज्य का चित्र उभारा||
सबके नैनन शोभा पाता|
सब की इच्छा फिर आ जाता||
किन्तु आज यह क्या होता है|
अन्तस् मेरा क्यों रोता है||
संघर्षशील मनुवंश हमारा|
भरतदेश है सबसे प्यारा||
आज दशा नहिं जाय बखानी|
नशाखोर हुइ गयी जवानी||
दोषारोपण और दिखावा|
कहाँ गया अपना पहनावा||
साथ कौन अब किसका देता|
छीना झपटी सब कर लेता||
निर्धन निर्बल दीन मलीना|
कठिन बहुत है इनका जीना||

एक वर्ग मध्यम है न्यारा|
असमंजस में सोचत हारा||
है तो सोता सभी सुखों का|
एक सिन्धु अब सभी दुखों का||
घर घर में है खूनी लीला|
होता शब्द प्रहार नुकीला||
नेताओं का राम खिलौना|
राजनीति का खेल घिनौना||
घोर निराशा छेड़ प्रसंगा|
जहाँ तहाँ हैं जब तब दंगा||
धनलोलुप हैं पद में अन्धे|
बहुत घिनौने इनके धन्धे||
अपने कर्मों का फल पाता|
समय चूकि पुनि वह पछताता||
प्रजातन्त्र में प्रजा दुखारी|
दीन हीन क्यों विवश विचारी||
दूध हीन क्यों शिशु की माता|
कौन धर्म कुल रीति निभाता||
मात पिता की होत न सेवा|
चाहत दोनउ हाथन मेवा||
दूर दूर सब रिश्ते नाते|
कौन हँसाता सभी रुलाते||
रामराज्य जो चाहो आये|
यदि चाहो जो दुख छट जाये||
साथ खड़े सुख-दुख में दीखो|
पहले मिलजुल रहना सीखो||
दुष्ट माथ पर करो प्रहारा|
करो लोभ का शीश उतारा||
एक भक्त ने लंका जारी|
उससे हर पल विपदा हारी||
राम नाम का अधिकारी है|
राम उसी पर वलिहारी है||
है बलशाली और विवेकी|
जग गाता है उसकी नेकी||
रामराज्य है उसकी थाती|
चीर दिखाता अपनी छाती||
पौरुष का है एक शरीरा|
हनुमत मेरा है बलवीरा||
संकेतों में है समझाया|
क्यों तूने दुख ओढ़ बिछाया||

© दिलीप कुमार पाठक सरस

हनुमत भक्ति
छंद~मनहरण घनाक्षरी

राम मेरे मन रमे, राम मेरे तन रमे|
रोम रोम पल पल,हुआ मेरे राम का||

राम को जो भजता है, राम को जो पूजता है|
वही मेरे काम का है, वही मेरे काम का||

श्रीराम वाल्मीकि प्यारे , तुलसी के न्यारे राम|
राम नाम प्यारा अति, अवध ललाम का||

राम नाम जपना है, राम नाम रटना है|
एक नाम राम राम, नाम सत्य धाम का||

© दिलीप कुमार पाठक सरस

ग्यारह छन्दीय श्रीराम गुणगान

1- तिलका छन्द
विधान- सगण सगण =6 वर्ण चार चरण दो -दो चरण समतुकान्त

सुखधाम छले ।
वन राम चले ।।
भगवा तनके ।
तपसी बनके ।।

सरयू तट पे ।
उतरे झट से ।।
तजि नाव चढ़े।
रघुवीर बढ़े ।।

बढ़िये मग में ।
तपते पग में ।।
सिय सोच रही ।
सकुचाइ कही ।।

2- पदम माला छन्द
विधान- रगण रगण गुरु गुरु =8 वर्ण चार चरण दो -दो चरण समतुकान्त ।

देव मेरे बड़े भारी ।
नाथ की है कृपा सारी ।।
राम मोपै दया कीजे ।
दुःख सारे हटा दीजे ।।

3- राजहंसी छन्द
विधान- नगण रगण रगण लघु गुरु =11वर्ण
111 212 212 1 2
चार चरण दो- दो चरण समतुकान्त

नमन जो करे दास हो वही ।
नयन राम के खास हो वही ।।
फल सदा मिलेगा प्रताप का।
जनम हो सके धन्य आपका ।।

भजन कीजिए आप राम का।
जनम धन्य हो पुण्य नाम का ।।
दरश भी मिले नित्य आपके ।
शमन हो सदा कृत्य पाप के ।।

4-चौपाई छन्द
विधान- प्रति चरण 16 मात्रा, चार चरण, दो दो चरण समतुकान्त ।कल संयोजन का विशेष ध्यान रखना है ।

सिन्धु समीप गये हनुमन्ता। राखहि अनुपम मन बलवन्ता।
राम काज आतुर अति भारी, मंगल करहि अमंगल हारी ।।

शक्ति अनंत असीमित ज्ञाना, राम कृपा गुण ज्ञान निधाना ।
शील स्वभाव गुनहि मन राखै,राम भगति अन्तस तै चाखैं।।

नहिं बलवान कपी सम कोई, सिय सुधि लेन गये जे सोई।
अतिशय सरल वीर व्रतधारी, संशय दूर करो अति भारी ।।

उर धरि राम चरन मन माहीं, पार करो कछु संशय नाहीं ।
धैर्य धनी अति वीर विशेषा, निमिष एक सब कटें कलेशा।।

सिय अभिसार राम सँग भयऊ।करि विछोह रावण लै गयऊ।।
तासु हेत कीन्हाँ कपि क्रोधा, राम दूत यह अतुलित योधा।।

5-निश्चल छन्द
विधान- 16-7 पर यति 23मात्रा प्रति चरण दो- दो चरण समतुकान्त, चार चरण चरणान्त 21

रघुवीर सुनो मम पीर घनीं,
समीप मान।
अब देव दया कर दो अपनी,
अधीर जान।
तुम बिन कौन सुने दुख मेरा,
मेरे नाथ।
दीन दयाल उदास है दास ,
पकड़ो हाथ। *6-सूर

घनाक्षरी छन्द*
विधान- 8 8 8 6 पर यति चार चरण समतुकान्त ।

जानत जहान तोय,
ताहि को भरोसो मोय।
दीनता निहारि कर,
नाथ उठाइए ।।
तुम रघुवीर काज,
वानर बनाये बाज ।
सुरसा विपत्ति मारि
साथ निभाइए ।।
कष्टन पे भारी भये,
दीन हितकारी भये ।
शरण में आया दास,
लाज बचाइए ।।
हरण करो ये पीर,
' सरल 'पे भारी भीर ।
पवन के पूत आज,
नेह दिखाइये ।।

7◆हीर छंद◆
विधान~
[भगण सगण नगण जगण नगण रगण]
(211 112 111 121 111 212)
18 वर्ण,4 चरण,यति 10-8 वर्णों पर
[दो-दो चरण समतुकांत]

दीन दुखित देखत जन, विष्णु धरत रूप हैं ।
लोग कहत रोग शमक, दिव्यज सुरभूप हैं ।।
पावहिं धन धान्य सबहि, देवहिं धनवन्तरी ।
पुष्ट सबल देह रहहि , सुद्रढ़ अभियन्तरी।।

गावहु अब मंगल गुण, काटत सब रोग को ।
आप बनहिं दासन हित, भूलत निज योग को ।।

जीवन यह धन्य समझ , नाथ चलत साथ हैं ।
भक्तन सुख देत सकल, काटत अरि हाथ हैं ।।

8-मौक्तिक दाम छन्द

विधान- जगण जगण जगण जगण =12 वर्ण
चार चरण दो चरण- दो चरण समतुकान्त

सुनो मम टेर हरे रघुवीर ।
बधाँवन हार सदा मन धीर ।।
कृपा करिये प्रभु मोहि उठाय ।
रखो अब आपन दास बनाय ।।

भजो मन नाम हरी सुखधाम ।
होइ सब पूर्ण मनोरथ काम ।।
सदा बनि दास करो उपकार ।
वही रघुवीर बनावन हार ।।

9-जलहरण घनाक्षरी
विधान- 8 8 8 8 पर यति चार चरण चरणांत लघु लघु, चार चरण समतुकान्त।
दीन जान आप नाथ,
पकड़ो सवॉर हाथ ।
सीता पति साहब जी ,
निर्बल है दास तन ।।
भक्तन के पालक हो ,
जगत के चालक हो ।
मेरे प्रतिपालक हो ,
निर्मल करो ये मन ।।
ऋषि के सहाय भये,
सबरी के गेह गये ।
ताड़िका को मार दये,
वन के निवाहे जन ।।
भीलनी जटायु सब,
दर्शन कराये तब ।
लंक जीत लीनी जब,
हाथ से छुआ न धन।।

10-सोरठा छन्द
11-13 मात्रा प्रति चरण
करहिं भरत मन सोच,राम लखन सिय वन गमन ।
भारी अति संकोच, मात दियो वनबास निज ।।

नयन निरखि सिय नेह,रघुवर को मुख देखकर ।
लखन लखहिं तब देह,पुलकित मन चित रोक कर ।

शोक तजौ बलवीर, विमल सदा रघुवर करें ।
हृदय धरो कछु धीर, विपति सदा सबकी हरें ।।

11-संयुक्त छन्द
विधान- सगण जगण जगण + गुरु =10 वर्ण
चार चरण दो चरण समतुकान्त

सुखधाम श्री रघुवीर हैं ।
मिल जाइ भक्त अधीर हैं ।।
मन राखिए रघुनाथ जी ।
कटि जाय ये भव ताप भी ।।

अब और आप छलो नहीं ।
सब बैर छोड़ चलो कहीं ।।
रघुवीर तारन हार हैं ।
जगदीश के अवतार हैं ।।

प्रभु आप साथ लगे रहो ।
मम भाग नाथ जगे रहो ।।
करुणा करो इस दास पे ।
उतरो खरे निज आस पे ।।

बिजेन्द्र सिंह सरल
मैनपुरी उत्तर प्रदेश

राम

मदिरा-सवैया
[शिल्प~211×7+2] = (7 भगण + गुरु,10,12 वर्णों पर यति)

संग सिया लघु भ्रात लिये,
करने जग पूरन काम चले।
देव सभी हरषाय रहे ,
करने सब त्रास विराम चले।।

रोवत हैं सब ही जन तो ,
जब कानन को प्रभु राम चले।
रोकत है नर नार सभी ,
कित छोड़ हमें सुखधाम चले।।

राम भक्त हनुमान
बालाजी सरकार

देह है लंगोट लाल , भूत प्रेत कोतवाल,
बालाजी सरकार के, नाम को ही धरिये |

फंद सब छूट जाते, बस नाम मुख आते,
ऐसे महावीर का ही, नित ध्यान करिये |

दुष्टों का संहार करे, धर्म का प्रचार करे,
कभी न आराम करे, मत अब डरिये |

राम नाम है आधार, जगती खैवनहार,
आप सियाराम प्रिय , संकट को हरिये |

© रचनाकार नित्यानन्द
पान्डेय " मधुर "
अहमदाबाद गुजरात

पेज नं.३८

चौपइया छंद
•~•~•~•~•~•
यह एक मात्रिक छंद है, इसमें चार चरण होते हैं,
प्रत्येक चरण में ३० मात्रायें होतीं हैं, १०, ८, १२ पर
यति होती है |
•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•~•
जय श्री राम
•~•~•~•~•~•
प्रकटे रघुनंदन,
रघुकुल चंदन,
बंदन परम अनूपा |
जय जय सुख स्यंदन,
दुष्ट निकंदन,

तारन हे भव कूपा |
मिल देत बधाई,
सुर समुदाई,
मनमहुँ भरत अनंदा |
बरु लेत बलैया,
पुनि पुनि मैया,
निरख निरख मुख चंदा |
शंभु संग कागा,
भर अनुरागा,
आज सराहत भागा |
शुभ अस्तुति कीन्ही,
आशिष दीन्हीं,
प्रेम भगति बर माँगा |
उत्सव अति पावन,
मुनि मन भावन,
नवमी तिथि मधुमासा |
जय जय 'विश्वेश्वर'
प्रभु परमेश्वर,
पूरहु मम अभिलाषा ||

परमप्रभु श्री राम प्रकट्योत्सव पावन पर्व श्री राम नवमी पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित बधाई गीत !!
•~•~•~•~•~•~•`•~•~•~•~•~•~•~•~•~•
बजबें अवध में बधइया,
भये दशरथ जू के छैया |
ब्राह्मा जी नाचें, शिव जी नाचें,
नाचें जगत खिवइया |
भये दशरथ जू के छैया ||
उमा जी नाचें, रमा जी नाचें,
नाचें सरस्वति मैया |
भये दशरथ जू के छैया ||
ऋषि जन नाचें , मुनी जन नाचें,
भक्तहु ता ता थैया |
भये दशरथ जू के छैया ||
गंगा नाचें यमुना नाचें,
नाचें सरजू मैया |
भये दशरथ जू के छैया ||
गरुणहुँ नाचें भुसुंडहु नाचें,
नचें अंजनि के छैया |
भये दशरथ जू के छैया ||
'विश्वेश्वर' अग जग सब नाचें,
जय कौशिल्या मैया |
भये दशरथ जू के छैया ||

विश्वेश्वर शास्त्री 'विशेष'
राठ हमीरपुर उ.प्र.

पेज नं.३९

श्री राम

वर्ष छंद
विधान~
(222 221 121)
9 वर्ण, 4 चरण,
दो-दो चरण समतुकांत]

आओ पूजै दीन दयाल |
वो है प्यारे राम कृपाल||
पाते हैं सारे सुख धाम |
जो भी गावै वंदन राम||

जैसे वीणा के लय तार |
वैसे ही है जीवन सार ||
माया से जाओ अब जीत|
गाओ सीता राम पुनीत||

आएँगे मेरे प्रभु राम|
तेरा प्यारा है जग नाम ||
पायेगा सारे मन काम |
ध्यावै जो भी श्री जयराम||

रूपमाला/मदन छंद

विधान–24 मात्रा, 14,10 पर यति, आदि-अंत में वाचिक भार 21,
चार चरण, क्रमागत दो-दो चरण तुकांत

काम करो कुछ जन हित, आदर्श श्री राम।
धाम अयोध्या पूजन हो,अनुसरण है नाम।

रोम रोम कण कण व्यापत, जीव है अविराम।
होम है प्रभु की मन भक्ति,मरण नही विराम।

रहें कर्म चरित्र का भान न हो स्त्री अपमान।
शान हो सच ईमान की, हो धर्म का गान।

© डॉ• राहुल शुक्ल साहिल

मधु छन्द में राम का गुणगान

(तीन भगण दो गुरु कुल 11 वर्ण)
दो दो पद समतुकांत

राम जपे मन शीतल होई।
राम भजे सब कारज होई।
राम रटे भव सागर तारे।
राम कहे 'मधु'होय सुखारे।

राम बसे घट भीतर प्यारे।
राम रहे बस पास तिहारे।
राम गये तन गार बचा रे।
राम रमें सब काज सँवारे ।

राम बिना जग प्रीत नही रे।
राम सिया बिन जीत नही रे।
राम वहाँ कछु कष्ट कहाँ रे।
राम जहाँ सुख सार वहाँ रे।

राम हुए नवमी दिन लाला।
राम भये जग नीत उजाला।
राम कहूँ कर जोर सभी से।
राम करें सब जीय सुखी से।

मधु गौतम
9414764891

: राम नवमी

राम नवमी त्योहार मनाओ।
घर घर बंदर वार सजाओ।
शुभदिन आया खुशी मनाओ।
झूमे नाचो सब मंगल गाओ।

राम प्रभू का हुआ आगमन।
पुलकित है मन जैसे गुलशन।
माँत कौशल्या मोती वारे।
राजा दशरथ राम निहारे।

हुई अयोध्या स्वर्ग से सुन्दर।
मंत्र उच्चारण करते मुनिवर।
सब दरवाजे सजी रंगोली।
गावत गीत सखियों की टोली।

इन्दू शर्मा शचि
तिनसुकिया असम

राम
घनाक्षरी

राम नहीं नाम एक,राम शक्ति है अनेक।
सोच सोच देखा हर उर में बिराजते।।

शिव धरते हैं ध्यान,रटें वीर हनुमान।
भक्तों के सदैव सारे काज हैं संवारते।।

त्याग जिनका महान,मेटता है अभिमान।
राम जपे जो भी उसे पापों से उबारते।।

आस" करता विचार,राम जी का हो प्रचार।
अंजनीकुमार संग सब ही पुकारते।।

कौशल कुमार पाण्डेय "आस"

राम जन्म (रामनवमी)

राम का जन्म हुआ दशरथ घर,
मन सबके हरसाये हैं।
शिव शंकर जी रूप बदलकर,
दर्शन करने आये हैं।।
साथ लिये हनुमत बलबाना,
लीला प्रभु की न्यारी हैं।
राम नाम से बडा न कोई,
भारत गाथा प्यारी हैं।।
माता सब हर्षित हो जाती,
प्रभु के दर्शन पाती हैं।
धूमधाम से बजे बधाई,
राग छतीसो गाती हैं।।
नगर अयोध्या राम जी बसते
रंग बिरंगे मधुबन हैं।
फूलो की कलियों से महके,
सुन्दर सारे उपवन हैं।
रूप मनोहर अनुपम उपमा,
करते सब नर नारी हैं।।
सेवा करने की जग भीतर,
बारी नेक हमारी हैं।।
कृपा करे रघुनाथ जो हम पे,
नैया पार लगाई हैं।
लख मोहनी मूरत गोरी सूरत,
मन *भारत* के समाई हैं।।

- नीतेन्द्र सिंह परमार " भारत "
छतरपुर (मध्यप्रदेश)
सम्पर्क :- 8109643725

मुक्तक

हुआ जब जन्म रघुवर का ,
लगा खुशियो का मेंला है ।

हुऐ दशरथ बहुत हर्षित ,
गमों को खूब झेला है ।।

चलो *साथी* अवध में अब ,
वहाँ रसरंग है बरसे ।

चले शिव आज दर्शन को ,
मिला उनको न धेला है ।।

© कवि बृजमोहन श्रीवास्तव"साथी"
डबरा ग्वालियर म.प्र.

ΔΔΔइक्कीस छंदीय श्री राम-स्तवनΔΔΔ

1-◆शुभमाल छंद◆
शिल्प:-
[जगण जगण(121 121),
दो-दो चरण तुकांत,
6वर्ण प्रति चरण]

सिया भरतार।
करें भव पार।।
अनेक प्रकार।
करो मनुहार।।

==========

2-◆कुसुम छंद◆
विधान~
[नगण नगण लघु गुरु]
(111 111 1 2)
8 वर्ण,4 चरण
दो-दो चरण समतुकांत]

सिय रघुपति भजो।
सकल कुमति तजो।।
जरत जगत सबै।
कछुक समय अबै।।

==========

3-◆बुद्बुद छंद◆
विधान~
[नगण जगण रगण]
(111 121 212)
9 वर्ण,4 चरण
दो-दो चरण समतुकांत]

रघुपति जू निहारिये।
गति अब तो सुधारिये।।
नमन करूँ अधीन हूँ।
सकल प्रकार दीन हूँ।।

==========

4-◆मानस छंद◆
विधान~
[नगण यगण भगण सगण]
(111 122 211 112)
12 वर्ण,यति 6,6 वर्णों पर
4 चरण,दो-दो चरण समतुकांत।

चरण पखारूँ,श्री रघुपति के।
पटल उघारौ,मो जड़मति के।।
भव भय टारौ, संकट हर लो।
चरनन मोहे, चाकर कर लो।।

==========

5-◆मनोरम छंद◆
विधान-प्रति चरण 14 मात्राएँ
2122 2122

राम जू अब तो निहारौ।
नाथ गति मोरी सुधारौ।।
दास शरणागत बचाये।
प्रभु सुजस अस लोक गाये।।

==========

6-◆द्रुतपद छंद◆

विधान~
[नगण भगण नगण यगण]
(111 211 111 122)
12वर्ण,4 चरण,यति 4,8 वर्णों पर
दो-दो चरण समतुकांत]

अवधनाथ दशरथ दुलारे।
सब प्रकार समरथ सहारे।।
पद पखार विनय नित कीजे।
प्रभु उदार शरण गह लीजे।।

==========

7-◆ रुचिरा(२) छंद◆
विधान~
[भगण तगण नगण गुरु गुरु]
(211 221 111 2 2)
11वर्ण,4 चरण,यति 5-6वर्णों
पर,दो-दो चरण समतुकांत]

कौशलराजा,रघुपति प्यारे।
साधक तारे, असुर विदारे।।
नित्य मनाऊँ,नमन करूँ मैं।
सुंदर झाँकी, हृदय धरूँ मैं।।

==========

8-◆सुमति छंद◆
विधान-
नगण रगण नगण यगण
(111 212 111 122)
2-2चरण समतुकांत,4चरण।

द्रवहुँ राम जू नमन करूँ मैं।
छवि अनंत ये हृदय धरूँ मैं।।
सब प्रकार चाकर तव स्वामी।
चरण चापता नित अनुगामी।।

==========

9-◆पवन छंद◆
विधान~
[भगण तगण नगण सगण]

(211 221 111 112)
12 वर्ण प्रति चरण,यति{5,7}
4 चरण,2-2 चरण समतुकांत।

सोचत काहे, रघुपति भज ले।
जापत जा रे,भव भय तज ले।।
सुंदर कैसे, कमल नयन जू।
राघव कीजे, हृदय सयन जू।।

==========

10-◆चन्द्रिका छंद◆
विधान-
नगण नगण तगण तगण गुरु
(111 111 221 221 2)
2-2चरण समतुकांत,7,6यति।

सुखमय लगता, नाम भी आपका।
हिय महुँ रुचता,काम भी आपका।।
उरपुर बसिये, है यही कामना।
भव भय मुझको, रामजी थामना।।

==========

11-◆इन्दिरा छंद◆
विधान-
[नगण रगण रगण+ लघु गुरु]
111 212 212 12,
चार चरण,दो-दो चरण समतुकांत।

सुजन आज क्यों देर कीजिये।
चरण राम के पूज लीजिये।।
अधम दीन तारे कृपालु हैं।
जगत के सहारे दयालु हैं।।

==========

12-◆तोटक छंद◆
विधान~
4 सगण/चरण, चार
चरण,दो-दो चरण स्मतुकांत।

भव भेषज श्री रघुनाथ लला।

सिय सोहत संग अनूप कला।।
लख या छवि को मन होत मुदा।
रहिये उर राजत नाथ सदा।।

बरनै गुन ते कवि कोबिद को।
उर के पुर में सिय संग बसो।।
जस तीनहुँ लोकन में जिनको।
पद चाकर "सोम" सदा तिनको।।

==========

13-◆चौपई/जयकारी/जयकरी छंद◆
विधान~
चार चरण,प्रत्येक चरण में 15 मात्राएँ,
अंत में गुरु लघु।दो-दो चरण समतुकांत।

जय हो श्री राघव सरकार।
त्रिभुवन महिमा अपरम्पार।।
मर्यादा पुरुषोत्तम आप।
करते समन सकल संताप।।

पुनि पुनि नावहुँ चरणन शीश।
करिये कृपा कौसलाधीश।।
"सोम"झुकाये निश दिन माथ।
मोरे हृदय बसहुँ रघुनाथ।।

==========

14-◆चंचला छंद◆
विधान~
[रगण जगण रगण जगण रगण + लघु]
(212 121 212 121 212 1)

राम जू दयानिधान मोहिं दीजिये उबार।
शारदा जपैं अनंत संत भी करें पुकार।।
प्रार्थना यही करूँ झुकाय शीश बार-बार।
"सोम" एक बार दीन बंधु लीजिये निहार।।

==========

15-◆घनमयूर छंद◆
विधान~
[नगण नगण भगण सगण रगण लघु गुरु]

(111 111 211 112 212 1 2)
17वर्ण,4 चरण, {7,6,4 वर्णों पर यति}
दो-दो चरण समतुकांत।

दशरथ सुत जू, अवध दुलारे, मनै भजो।
भरम जगत के, उलझत जाते, सबै तजो।।
हर सुख मिलता, पद रज पाके, विचार लो।
अनुपम लगती,छवि प्रभुजी की, निहार लो।।

==========

16-◆असंबधा छंद◆
विधान~
[मगण तगण नगण सगण+गुरु गुरु]
(222 221 111 112 22)
14 वर्ण,4 चरण,
दो-दो चरण समतुकांत]

कैसी ये माया सब जगत नचाती है।
देती है क्या साथ विलग रह जाती है।।
भूला काहे झंझट तज जग के सारे।
मानो मेरी तो गुण रघुपति के गा रे।।

==========

17-◆चंडी छंद◆
विधान-
नगण नगण सगण सगण गुरु
(111 111 112 112 2)
दो-दो चरण समतुकांत,4 चरण।

चित धर भज रघुनाथ लला को।
विष सम गिन हर झूठ कला को।।
नर तन धर शुभ कार्य किये जा।
अमिय सरस रस सोम पिये जा।।

भज रघुपति हर काम बिहाई।
सब विधि सुलभ सबै सुखदाई।।
कुछ परहित कर ले उर लाई।
सच यह जगत बड़ा दुखदाई।।

==========

18-◆चंचरी छंद◆
विधान-
(12,12,12,10 मात्राओं पर यति,
4 चरण,दो-दो चरण समतुकांत,चरणान्त गुरु)

अजा गजा गिद्ध सिद्ध,
राम जू उबार दये,
द्रवहुँ सो दीनानाथ,भव से उबारिये।
राखौ जू शरण मोहिं,
आन आसरौ न कोय,
चरणों में पड़ा दीन,अब तो निहारिये।।
जानौं दीन हीन गति,
राम जू सुधार दई,
सियानाथ मोरी गति,तैसइ सुधारिये।
सुनिये पुकारे "सोम",
कौशलकिशोर जू सो,
नेह को निमंत्रण है,हिय में पधारिये।।

============================

19-◆चौपइया छंद [सम मात्रिक] ◆
विधान~
{4 चरण समतुकांत,प्रति चरण 30 मात्राएँ,
प्रत्येक में 10,8,12मात्राओं पर यति
प्रथम व द्वितीय यति समतुकांत,
जगण वर्जित,प्रत्येक चरणान्त में गुरु(2),
चरणान्त में दो गुरु होने पर यह छंद
मनोहारी हो जाता है।}

कलु कलुष निकंदन,दशरथनंदन,
कौशिल्या के लाला।
सन्तन हितकारी , अवधबिहारी,
मानस मंजु मराला।।
वंदहुँ तव चरणा,भवभय हरणा,
सेवत सकल भुआला।
गावहुँ गुन ग्रामा ,पूरण-कामा,
सुंदर "सोम" कृपाला।।

==========================

20-◆रसाल छंद◆
विधान~
[भगण नगण जगण भगण जगण जगण+लघु]

(211 111 121 211 121 121 1)
19 वर्ण , 9 ,10 वर्णों पर यति ,4 चरण
दो-दो चरण समतुकांत।

राघव रघुपति राम, आप सबके दुख टारन।
हे जगपति सुखधाम, नाथ सब काज सँवारन।।
जापत सियहि समेत, दास पद पंकज चाकर।
गावत गुन गन नित्य,"सोम"निज शीश नवाकर।।

==========

21-◆मकरन्द छंद◆
विधान~
[नगण यगण नगण यगण नगण नगण नगण नगण गुरु गुरु]
(111122,111122,11111111,111122)
26 वर्ण,4 चरण,यति 6,6,8,6,वर्णों पर
दो-दो चरण समतुकांत]

अवध दुलारे, जगत सहारे,
पुनि पुनि प्रनवउँ,तव गुण गाऊँ।
सब विधि सेवा,करहहुँ देवा,
सकल जगत तज,पद रज पाऊँ।।
द्रवहुँ दयाला, परम कृपाला,
सुमिरिहुँ मन महुँ ,अति हरषाऊँ।
रहहुँ ससंकू,बड़ मति रंकू,
कहहुँ विमल जस,अनुदिन ध्याऊँ।।

~शैलेन्द्र खरे"सोम"

हनुमत्स्तवन (भगत जी)

~ ★ हनुमत्स्तवन ★ ~

♦ चित्रपदा छन्द ♦
(भगण+भगण+गुरु+गुरु, ८ वर्ण, ४ चरण, दो-दो चरण समतुकान्त)

जन्म जबै हनुमाना |

काल तबै शुभमाना ||
लोक अलोक शुभाया |
अंजनि केसरि काया ||

अंश गहे शिशु रूपा |
वंश महे कपि भूपा ||
बाल किये महँ काजा |
त्रास दिये अरि राजा ||

कौतुक कीन्ह अनेका |
वीर बली जग एका ||
सूरज चाह अहारा |
राख लिये मुख कारा ||

लोप हुआ जग ज्ञाना |
दीन्ह तभी सुर भाना ||
खोल रहे मुख आपा |
मेटन को जग तापा ||

ज्ञान गहा जग भारी |
खेलत पापिअ मारी ||
शाप गहा सुधि संता |
कारक तारक कंता ||

भूलि गये निज माया |
राम बसे बस काया ||
जाप किये सठ मासा |
ध्यान महे अठ आसा ||

देखत रामहि लोका |
लेखत लोक असोका ||
रूप रहे सम भाई |
भूप सु - ग्रीव कहाई ||

साथ रहे सब काला |
नाथ उहे कपि टाला ||
छाँड़ि नहीं इक ठौरा |
राम भरोसहि जौरा ||

आय गये बन रामा |
पाय हुये नत ठामा ||
काँध बिठायहुँ लाये |
भूपहि मित्र बनाये ||

भूप तहाँ सब पाये |
खोजन माय पठाये ||
जाय रहे दिशि दक्षा |
कंटक कारहि कक्षा ||

कूदि गये महँ सिन्धू |
मेल किये अरि बंधू ||
खोजि गहे तिय नाथा |
नाम किये रघुनाथा ||

अक्ष कुमार पठाया |
लोक महा यम दाया ||
ठाडत जाय अनाया |
रामहि नाम सुनाया ||

भाँतिक रावनु लेखा |
किञ्चित ठाडहि देखा ||
लंक जरा रख डारी |
हेम भई उहि कारी ||

लौटिअ रामहि पाये |
सीतहि आयसु गाये ||
हर्षित राम रमाई |
कंठ उठाय लगाई ||

लंकहि कीन्ह पयाना |
बेगहि सागर जाना ||
रामहि बाँधिअ पाधे |
सागर बंध अगाधे ||

जुद्ध हुआ बड़ भारी |
हारहि आसुरि खारी ||
जीति गये सुख धामा |
लोकहि ख्यातिअ रामा ||

लौटि अजोधहि आये |
नाथहि हाथहि पाये ||
रामु सिया वर दाये |
आपु अमोलक पाये ||

लोक हुआ महँ नामा |
दास गहा पद रामा ||

कंटक संकट टारे |
रामिअ नामहि भारे ||

मोर रहे यक आपा |
नाथ क्षरो सब तापा ||
एकहि आप सहारे |
कौन यहाँ अघ टारे ||

दीनहि जानिअ आओ |
माथहि हाथ फिराओ ||
हारक लौकिक तापा |
आपुहि मौलिक आपा ||

दासहि नेह उछारो |
फंद यहीं सब जारो ||
कंठ लगाय अजी हौं |
हार किये हिय जी हौं ||

जोरहि नामु उचारूँ |
आपुहि नाथ पुकारूँ ||
जीवनु आपु अधारा |
पाँइ रहेहुँ सहारा ||

©भगत

हनुमान जन्म कथा भगत जी द्वारा संकलित

🌹 जय सियाराम 🌹
🙏 हनुमान-जन्मकथा 🙏

ज्योतिषियों के सटीक गणना के अनुसार हनुमान जी का जन्म आज से लगभग 1 करोड़ 85 लाख 58 हजार 112 वर्ष पहले चैत्र पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चित्रा नक्षत्र व मेष लग्न के योग में सुबह 6.03 बजे हुआ था |

हनुमान की माता अंजनि के पूर्व जन्म की कहानी~
कहते हैं कि माता अंजनि पूर्व जन्म में देवराज इंद्र के दरबार में अप्सरा थी, नाम था~पुंजिकस्थला । बालपन में वो अत्यंत सुंदर और स्वभाव से चंचल थी , एक बार अपनी चंचलता में ही उन्होंने तपस्या करते एक तेजस्वी ऋषि के साथ अभद्रता कर दी थी । गुस्से में आकर ऋषि ने पुंजिकस्थला को शाप दे दिया कि जा ! तू वानर की तरह स्वभाव वाली वानरी बन जा | ऋषि के शाप को सुनकर पुंजिकस्थला ऋषि से क्षमा याचना मांगने लगी, तब ऋषि ने कहा कि तुम्हारा वह रूप भी परम तेजस्वी होगा।
तुमसे एक ऐसे पुत्र का जन्म होगा , जिसकी कीर्ति और यश से तुम्हारा नाम युगों-युगों तक अमर हो जाएगा | इस प्रकार से तब ही अंजनि को वीर पुत्र का आशीर्वाद मिल गया था |

ऋषि के शाप से त्रेता युग मे अंजनि को वानर नारी के रूप मे धरती पे जन्म लेना पडा |
इंद्र , जिनके हाथ में पृथ्वी के सृजन की कमान है और उनके यहाँ हजारों अप्सराएँ (सेविकाएं) थीं | उन्हीं में से एक अप्सरा पुंजिकस्थला की सेवा से प्रसन्न होकर इंद्र ने उसे मनचाहा वरदान मांगने को कहा | तब उस अप्सरा ने हिचकिचाते हुए कहा कि उन पर एक तपस्वी साधु का शाप है, अगर हो सके तो उन्हें उससे मुक्ति दिलवा दें। इंद्र ने उनसे कहा कि वह उस शाप के बारे में बताएँ, क्या पता वह उस शाप से उन्हें मुक्ति का मार्ग बता सके |

उस अप्सरा ने कहा कि 'बालपन में जब मैं खेल रही थी , तो मैंने एक वानर को तपस्या करते देखा | मेरे लिए यह एक बड़ी आश्चर्य वाली घटना थी | मैंने उस तपस्वी वानर पर फल फेंकने शुरू कर दिए, बस यही मेरी गलती थी क्योंकि वह कोई आम वानर नहीं बल्कि एक तपस्वी साधु थे।

मैंने उनकी तपस्या भंग कर दी और क्रोधित होकर उन्होंने मुझे शाप दे दिया कि जब भी मुझे किसी से प्रेम होगा तो मैं वानर नारी बन जाऊँ गी। मेरे बहुत गिड़गिड़ाने और माफी माँगने पर उन्होंने साधु ने कहा कि मेरा चेहरा वानर का होने के बाद भी उस व्यक्ति का प्रेम मेरी तरफ कम नहीं होगा।
तब इंद्र देव ने उन्हें कहा कि इस शाप से मुक्ति पाने के लिए आप को धरती पर जाकर वास करना होगा, जहां आप अपने पति से मिलेंगी और यह भी कहा कि शिव के अवतार को जन्म देने के बाद अंजना को इस शाप से मुक्ति मिल जाएगी।

इंद्र की बात मानकर वही अप्सरा भूमि पर अंजन प्रदेश के राजा कुंजर (हाथी के समान बली होने से यह नाम था) के यहाँ पुत्री रूप में आईं | नाम रखा गया ~ अंजनि\अंजना | जन्म से वह साधारण मानव की भाँति ही थी, हालाँकि जन्म कपि-कुल में हुआ था | कालान्तर पर एक दिन जंगल में अंजनि ने एक बलशाली युवक को शेर से लड़ते देखा और उसके प्रति आकर्षित होने लगीं, जैसे ही उस व्यक्ति की नजरें अंजना पर पड़ीं, अंजना का चेहरा वानर जैसा हो गया । जब अंजनि जोर-जोर से रोने लगीं, तब वह युवक उनके पास आया और उनकी पीड़ा का कारण पूछा तो अंजनि ने अपना चेहरा छिपाते हुए उसे बताया कि वह रूपहीन हो गई हैं। अंजनि ने उस बलशाली युवक को अपने समीप देखा तो पाया कि उसका चेहरा भी वानर जैसा था।
अपना परिचय बताते हुए उन्होंने कहा कि वह कोई और नहीं वानर राज केसरी हैं, जो जब चाहें इंसानी रूप में आ सकते हैं। अंजनि का वानर जैसा चेहरा उन दोनों को प्रेम करने से नहीं रोक सका और समय पर दोनों का विधिवत् विवाह भी हुआ।

केसरी एक शक्तिशाली वानर थे , जिन्होने एक बार एक भयंकर हाथी को भी मारा था। उस हाथी ने कई बार असहाय साधु-संतों को विभिन्न प्रकार से कष्ट पँहुचाया था। तभी से उनका नाम केसरी पड गया, "केसरी" का अर्थ होता है सिंह।

मतंग मुनि का आशीर्वाद ~
पुराणों में कथा है कि केसरी और अंजनि ने विवाह तो कर लिया, पर संतान सुख से वे वंचित ही थे । तब दोनों मतंग ऋषि (इनके आश्रम में ही शबरी रहतीं थीं) के पास गए | तब मंतग ऋषि ने उनसे कहा-पप्पा (कई लोग इसे पंपा सरोवर भी कहते हैं) सरोवर के पूर्व में नरसिंह आश्रम है, उसकी दक्षिण दिशा में नारायण पर्वत पर स्वामी तीर्थ है | वहाँ जाकर उसमें स्नान करके, बारह वर्ष तक तप एवं उपवास करने पर तुम्हें पुत्र सुख की प्राप्ति होगी।

अंजनि को पवन देव का वरदान ~
अंजनि ने मतंग ऋषि एवं अपने पति केसरी से आज्ञा लेकर तप किया था और बारह वर्ष तक केवल वायु पर ही जीवित रही | एक बार अंजना ने "शुचिस्नान" करके सुंदर वस्त्राभूषण धारण किए। तब संयोगवश वायु देव उसके नैसर्गिक सैन्दर्य पर मोहित हो गए, परन्तु उन्होंने मर्यादा रखते हुए अंजना की तपस्या से प्रसन्न होकर उसके कर्णरन्ध्र में प्रवेश कर उसे वरदान दिया, कि तेरे यहां सूर्य, अग्नि एवं सुवर्ण के समान तेजस्वी, वेद-वेदांगों का

मर्मज्ञ, विश्ववन्द्य महाबली पुत्र होगा।

अंजनि को भगवान शिव का वरदान ~
अंजनि मग्न होकर अपने आराध्य शिव की आराधना करती रही | जब तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें वरदान माँगने को कहा, तब अंजना ने पूर्व जन्म की साधु के श्राप से लेकर देवराज द्वारा बताए मार्ग तक की बात कहते हुए निवेदन किया कि वर-मुक्ति के लिए व लोकोपकार हिते उन्हें शिव के अवतार को जन्म देना है, इसलिए प्रभु ! आप ही बालक के रूप में उनकी कोख से जन्म लें। तब 'तथास्तु' कहकर शिव अंतर्धान हो गए।

हनुमान का दशरथ-सुत संयोग~
इस घटना के बाद एक दिन जब अंजनि शिव की नियमित आराधना कर रही थीं, वहीं दूसरी ओर अयोध्या में इक्ष्वाकुवंशी महाराज अज के पुत्र दशरथ भी अपनी तीन रानियों (कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी) के साथ पुत्र-रत्न की प्राप्ति के लिए शृंगी ऋषि (दशरथ के जामाता, पुत्री शान्ता के पति) के सान्निध्य में 'पुत्र कामेष्टि यज्ञ' कर रहे थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर स्वयं अग्नि देव ने प्रकट होकर शृंगी को खीर का एक स्वर्ण पात्र (कटोरी) दिया और कहा "ऋषिवर! यह खीर रानियों को खिला दो, राजा की इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।" लेकिन इस दौरान एक चमत्कारिक घटना हुई, एक पक्षी (चील) उस खीर की कटोरी में थोड़ी सी खीर अपने पंजों में फंसाकर ले गया और तपस्या में लीन अंजनि के हाथ में गिरा दिया। अंजनि ने भी शिव का प्रसाद (कृपा) समझकर उसे ग्रहण कर लिया।

एतदर्थ उक्त सब प्रकरणों के संयोग स्वरूप अंजनि के पुत्र होने पर उसका नाम मारूति रखा गया | बाद में सूर्य को आकाश-फल समझकर निगलने के प्रकरण (गुरु ज्ञान समाहन) में मारूति ,हनुमान इत्यादि नाम मिलते गए | हनुमान जी को आंजनेय नाम से भी जाना जाता है , जिसका अर्थ होता है 'अंजनि का पुत्र या द्वारा उत्पन्न'। उनका एक नाम पवन पुत्र भी है, तो शिव-सुत भी और केसरी नंदन तो वे हैं ही | जिसका शास्त्रों में सबसे ज्यादा उल्लेख मिलता है।

दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रसाद का परिणाम होने से हनुमान को दशरथ पुत्र भी कहा जाता है, यानि की राम के भाई और वह भी अग्रज😊 , इसीलिए रामायण में राम ने बारंबार हनुमान जी कहा है कि *तुम मम प्रिय भरत सम भाई* |

जय-जय सियाराम, जय हनुमान !

©भगत (संकलित)

श्री राम-चंद्र जी की जीवनी

अयोधा के राजा दशरथ और उनकी सबसे बड़ी पत्नी कौशल्या से श्री राम का जन्म हुआ | इनके तीन छोटे भाई भरत , लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे | यह समय त्रेता युग कहलाया |

श्री राम और उनके तीनो भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने गुरु वशिष्ट के गुरुकुल में शिक्षा पाई | चारों भाई वेदों उपनिषदों के बहुत बड़े ज्ञाता बन गये | गुरुकुल में अच्छे मानवीय और सामाजिक गुणों का उनमें संचार हुआ | अपने अच्छे गुणों और ज्ञान प्राप्ति की ललक से वे सभी अपने गुरुओ के प्रिय बन गये|

मिथिला के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के लिए स्वयंवर आयोजित किया| जिसमें देश विदेश से महाबली राजाओ को न्योता दिया गया | श्री राम लखन और गुरु विश्वामित्र के साथ इस सम्मलेन में आये | यह घोषणा की गयी की जो कोई सबसे पहले भगवान् शिव की इस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा , वही सीता से विवाह करने के पात्र होगा | सभी महाबली एक एक करते प्रत्यन करते रहे और विफल होते रहे | अंत में गुरु विश्वामित्र के आदेश से श्री राम ने यह कार्य किया और सीता से विवाह के पात्र बने |

सबसे बड़े पुत्र होने की वजह से श्री राम को अयोध्या का राज्य नियमों से राजा बनना था लेकिन सोतेली माँ कैकई स्वार्थवश अपने पुत्र भरत को राजा बनाना चाहती थी | महाराज दशरथ से उन्होंने अपने पुत्र के राज पाठ मांग लिया और श्री राम के लिए १४ वर्षो का वनवास |

राम-सीता लक्ष्मण के साथ वन चले गए|

वनवास के दौरान रावण ने छल से माँ सीता को हरण किया|

वानर सेना की मदद से रामजी ने सीता को पुनः प्राप्त किया|

अयोध्यावासियों ने गृह आगमन पर श्री राम सीता और लखन का दीप जलाकर भव्य स्वागत किया| आज भी दिवाली पर दीपक उनके स्वागत में जलाये जाते है|

श्रीराम जी मर्यादा - पुरूषोत्तम कहलाये|

भारत में फिर से राम-राज्य और मर्यादित आचरण वाले राम के समान मनुजों की जरूरत है|

अनीता मिश्रा 'सिद्धि'

हजारीबाग, झारखण्ड

॥जय श्रीराम॥

कृपा करो मोपे रघुराई
तुम्हरे भरोसे प्रभु नाव बढ़ाई
राम नाम अम्रत जो पाई
जन्म जन्म के दुख बिसराई

राम ,लखन, सीता मन भाई
कैसी मधुर यह छवि बनाई
जन ,जन में ममता फैलाई
राम नाम ने पार लगाई

डाल पा त सब ह्रदय लगाई
केवट ,सबरी , हनुमत ,भाई
सहज ,सरल देखो करुणा ई
मर्यादा जिनकी परिछाई

बन मानव मानवता गाई
जाति ,पाती सब भेद भुलाई
ह्रदय प्रेम सब दुख बिसराई
त्याग की राह चले रघुराई

रामचरित्र उजियारी छाई
युग ,युग ने प्रभु की महिमा गई
जन्म जन्म जो जन्म में पाई
राम राम संग लव कुश गाई

जय श्री राम

©ममता सिंह राठौर

बेगि हरौ हनुमान महाप्रभु ।
जो कछु संकट होय हमारो।।

सम्पूर्ण सूत्रः-
9974803125
9898773360
9473907475

श्री स्वामी समर्थ

श्री रामदास जी महाराज (बापू)

(संस्थापक एवं संरक्षक)

श्री सीताराम आश्रम

अतुल पावर हाऊस, वाडी फलिया पार नदी के किनारे,
नेशनल हाईवे नं. ८ अतुल, जिला वलसाड (गुजरात)